स्वर लिपि में

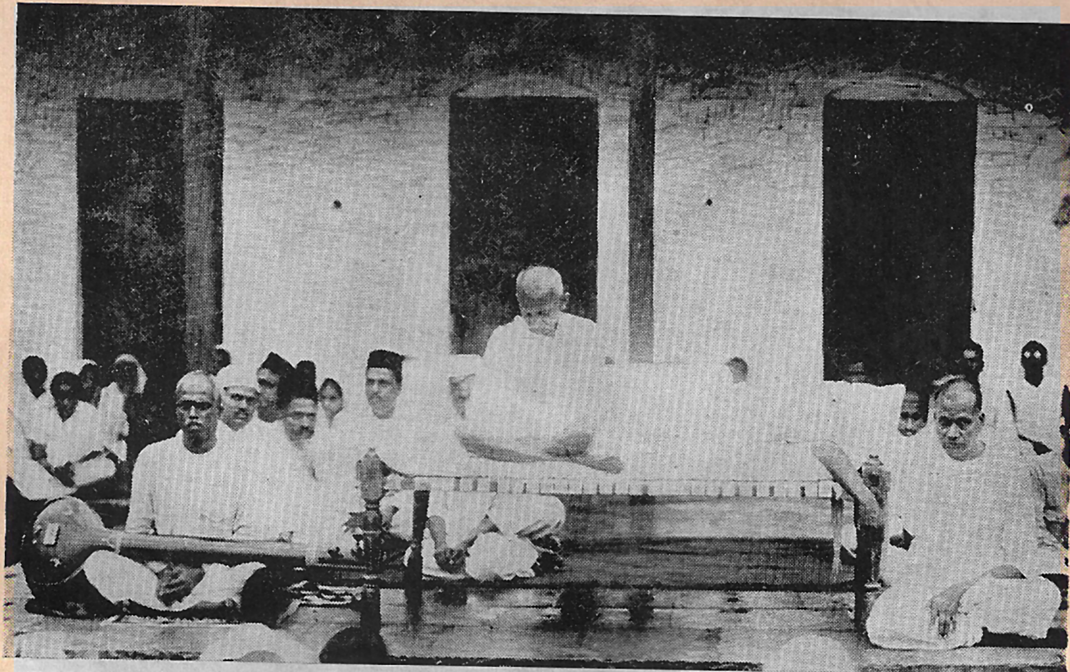
आश्रम भजनावलि

चुने हुए भजन

संपादक

रामचंद्र खरे

मधुरी खरे



शामकी प्रार्थनामें पू० बापूजी और स्व० खरेजी

महात्माजीकी प्रस्तावना

दु:खकी बात है कि भजनावलिकी नई आवृत्तिकी प्रस्तावना मुझे लिखनी पड़ती है। संग्रह करनेवाले तो कै० खरे शास्त्री थे।

लिखनेकी योग्यता मैं नहीं रखता; फिर भी इतना तो कह सकता हूँ कि जो संग्रह किया गया है, उसमें मुख्य हेतु यह है कि नैतिक भावना प्रबल हो। यह भी समझने लायक़ बात है कि एक ऐसा समूह पैदा हो गया है, जो इन भजनोंको कई बरसोंसे भक्ति-भावसे पढ़ता आया है। तीसरी बात यह है कि इस संग्रहमें किसी एक सम्प्रदायका खयाल नहीं रखा गया है। सब जगहसे जितने रत्न मिल गये, इकट्ठे कर लिये गये हैं। इसलिए इसे काफ़ी हिन्दू, मुसलमान, ख्रिस्ती, पारसी, शौक़से पढ़ते हैं, और इससे कुछ-न-कुछ नैतिक खुराक पाते हैं।

संस्कृत श्लोकोंके अर्थ देनेमें भाई किशोरलाल मशरूवालाने काफ़ी परिश्रम उठाया है।

प्रसादपुर
८-२-'४७

मो० क० गांधी

प्रास्ताविक

श्रुति कहती है कि "ईश्वर एक है, किन्तु भक्त लोग अपनी चित्त-वृत्तिके अनुसार अलग अलग नाम-रूपसे उसकी उपासना करते हैं।" यह सनातन सत्य जिन लोगोंने पाया, उन पर यह जिम्मेवारी आ पड़ी है कि वे अपने जीवनमें सर्व-धर्म-सम-भाव और विश्व-बन्धुत्वका विकास करें।

'स्वधर्म' के तत्त्वका पालन करते हुए हमारे आश्रमने सब धर्मों और पन्थोंके प्रति आदर रखनेका व्रत लिया है। उसके अनुसार आश्रममें उभय सन्ध्याकालको जो उपासना या प्रार्थना की जाती है उसका यह संग्रह है। आश्रमका जीवन जैसा समृद्ध होता गया, वैसा यह भजन-संग्रह भी बढ़ता गया है।

हम प्रार्थना करते हैं कि हमारी यह वाङ्मयी उपासना प्रभुको प्रिय हो।

सत्याग्रहाश्रम,
साबरमती

नारायण मोरेश्वर खरे

निवेदन

संगीत यह एक दिव्य कला है। साधक नाद-ब्रह्मके उपासक होते हैं। उस उपासनाके द्वारा वे अपने जीवनको धन्य बनाते हैं। श्रोतागण भी उसके संगीतका रसास्वाद करते हुए आनन्द विभोर हो जाते हैं।

ऐसा संगीत लोक भोग्य बने और तत्सम्बन्धी संशोधनोंके प्रति विद्यार्थी एवं उसमें अभिरुचि रखनेवाले सभीका अनुराग बढ़े तथा वे ऐसा कार्य करनेमें प्रेरित हों और सामान्य जनसमाजका भी इस विषयमें रस साध्य हो इस दृष्टिसे महात्मा गांधीजीके साथी संगीत साधक स्व० पण्डित नारायण मोरेश्वर खरेकी पुण्य स्मृतिमें ई० सन् १९५६ में 'भारतीय संगीत विद्यालय' नामक संगीत-संस्था अस्तित्वमें आयी। इस संस्थाको विशेष कार्यक्षम बनानेके हेतु ई० सन् १९६१ में उसे पब्लिक ट्रस्ट एक्टके अनुसार ट्रस्टके स्वरूपमें परिणत की गई है।

यह संस्था दिन प्रति दिन विकासके पथ पर अग्रसर हो रही है। उसमें संगीत-शिक्षाके अतिरिक्त संगीत-प्रतियोगिताके आयोजन द्वारा विद्यार्थियोंको संगीत-साधनाके प्रति प्रेरणा प्रदान कर रही है तथा नवोदित कलाकारोंको प्रोत्साहित करनेमें अपना हाथ बँटा रही है।

पण्डित नारायणराव खरे शास्त्रीय संगीतके साधक थे किन्तु उनकी दृष्टि विशाल थी। आदर्श निराला था। ध्येय अजीब था। लोकसंगीतका संशोधन कर उसमें संजीवनी छिड़ककर प्रजाके सन्मुख प्रस्तुत करनेकी उनकी तमन्ना थी। उसके लिए उनके प्रयत्न प्रसिद्ध हैं। उनका मन्तव्य है कि लोक संगीतका स्थान प्रजा-जीवनमें अति महत्त्वका है। उनका कथन है कि लोक-संगीत यह तो जनताका जीवन-रस है।

किसी प्रसंगवशात् उच्चारित उनके शब्द बड़े प्रेरक हैं: राष्ट्रके उत्थानमें संगीत बड़े महत्त्वका पार्ट अदा कर सकता है। संगीताचार्य देशकी परि-स्थिति समझ ले और अपने श्रोताओंको देशभक्तिके रसमें सराबोर करके उनमें नया चेतन भर दे यह अत्यावश्यक है।

'आश्रम भजनावलि' नामक पुस्तिकामें उनके द्वारा संग्रहित भजन साबरमती आश्रममें आयोजित गांधीजीकी प्रार्थनाओंमें गाये जाते थे, और उन्हींकी प्रेरणासे पुस्तिकाके रूपमें प्रकाशित होनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। एक प्रकारसे यह तो स्व० खरेजीकी अमूल्य स्मृति-सी बन गई है। ये भजन दसियों से जनतामें गाये जा रहे हैं किन्तु उनकी तर्जों, स्वरों और रागोंमें अनेक प्रकारकी विकृति दृष्टिगोचर होती है। अतः ये भजन पूज्य बापूजीकी प्रातः सायं प्रार्थनाओंमें जिन रागों व तर्जोंमें गाये जाते थे उन्हीं रागों व तर्जों में गाये जायें और इस प्रकार अपनी संस्कृति सुरक्षित रहे इस दृष्टिसे इन भजनोंका स्वरांकनका कार्य हस्तगत किया जा रहा है और उसके लिए 'आश्रम-भजनावलि' में से पसंद किये गये भजनोंका स्वरांकन करके प्रकाशित करनेकी अनुमति श्री नवजीवन ट्रस्टके ट्रस्टियोंने देकर हमारा कार्य आसान कर दिया है। इसके लिए हम उनके ऋणी हैं।

ऐसे कार्य आर्थिक सहायताके बिना असाध्य होते हैं। अतः गुजरात सरकारकी ओरसे प्राप्त १०,०००) रुपयेकी उदार सहायताके द्वारा यह कार्य सिद्ध हो सका है। इसके लिए हम गुजरात सरकारके प्रति आभार व्यक्त करनेमें गौरव अनुभव करते हैं। संगीतके प्रति गुजरात सरकार द्वारा प्रदर्शित सद्भावना सचमुच चिरस्मरणीय बनी रहेगी।

हमारे अनन्य चिन्तक श्री काका साहब कालेलकरका स्व० पं० नारायणराव खरेजीके साथका सम्बन्ध (ई० सन् १९१७) बहुत पुराना है। उनके द्वारा निर्मित 'आश्रम भजनावलि' गांधीजीकी तरह उनकी भी प्रिय पुस्तक है। वे आरंभसे ही खरेजीके सहायक रहे हैं। इस 'भजनावलि' में से चुने गये भजनों के स्वरांकनकी इस पुस्तकमें भी उन समर्थ विचारक एवं चिंतककी प्रस्तावनाका लाभ प्राप्त हुआ है यह हमारा सद्भाग्य है। इस प्रकार हमारे कार्यमें हमें प्रोत्साहित करनेवाले उन महानुभावके हम आभारी हैं।

अन्तमें इस पुस्तकके संयोजनमें आवश्यक सलाह-सूचना प्रदान करके हमें सहायक होनेवाले सभीके सहयोगके लिए हम आभार प्रदर्शित करते हैं।

कान्तिलाल घीया
अध्यक्ष स्व. ना. मो. खरे
भारतीय संगीत विद्यालय ट्रस्ट

संपादकीय

हमारे पूज्य स्व० पिताजीकी ओरसे विरसेमें जो कुछ प्राप्त है वह है संगीत, और पू० गांधीजीकी ओरसे सम्पादित है प्रात:-शामकी प्रार्थना। हमारे लिए जो कुछ भी है तो ये ही दो श्रेष्ठ धन राशियाँ हैं।

'आश्रम भजनावलि' स्वयं एक उत्तम भजनोंका संग्रह है। इसमेंसे प्रथम और दूसरे भागके लिए भजनोंकी पसंदगीका प्रश्न हमारे लिए अतिशय जटिल है। वैसे तो हम यह कैसे कह सकते हैं कि यह भजन पू० बापूजीको अधिक प्रिय था और यह कम? सब भजन अच्छे हैं। इसीलिए तो उन्होंने भजनावलिमें स्थान प्राप्त किया है।

हमारे दिलमें एक विचारका आविर्भाव हुआ कि जो बहुश्रुत एवं बहुत बार गाये गये हों ऐसे भजन पहले छापे जायें। इस विचारको कार्यान्वित करनेमें पूज्य काका साहबने भी सम्मति प्रदान की। अत: हमने लगभग १०० भजन पसन्द करके उन्हें बताये। इस पसंदगीको पू० काका साहबने स्वीकृति दी जिन्हें आपके हाथोंमें रखते हुए हम आनन्द अनुभव करते हैं।

स्व० पिताजी सस्वरांकन सहित 'आश्रम-भजनावलि' छपवाना चाहते थे। उनकी यह इच्छा पूर्ण होनेके साथ हम गुरुऋण अदा करनेका सानंद गौरव अनुभव करते हैं।

यहाँ पर एक बातका उल्लेख किया जाय तो वह प्रसंगानुचित नहीं माना जायेगा। आनन्दाश्रम —— कान्हनगढ़के पूज्य स्वामी रामदासजी, पू० चाचाजी (गुरुदयाल मल्लिकजी) एवं पूज्य मोटा, जिन्होंने हमारे जीवन-गठनमें अमूल्य योगदान ही नहीं प्रस्तुत सम्पादन कार्यमें भी हमेशा चेतना स्वरूप साथ देते रहे हैं, उन्हींके आशीर्वादसे हम यह कार्य सार्थक कर सके हैं, यह निश्शंक बात है।

जिस भूमि पर हमारा जीवन पनपा है उस गुर्जर मातृभूमिके प्रति हमें अपना ऋण अदा करनेका समय एवं सुयोग प्राप्त हुआ है उसके लिए परमकृपालु परमात्माके पदकमलोंमें हमारे शत शत प्रणाम।

रामचन्द्र खरे

वसंत पंचमी, २२ जनवरी, १९६९ **मधुरी खरे**

अधूरा संकल्प पूरा हुआ

पू० गांधीजीके आश्रमकी प्रार्थनामें गाये जानेवाले भजनोंकी स्वरलिपि-का प्रकाशन करनेका विचार साबरमती आश्रमके जितना ही पुराना है। आश्रमके संगीतशास्त्री पंडित नारायण मोरेश्वर खरेने हमसे अिसकी चर्चा कभी बार की थी। अेक दफे अुन्होंने अिस बारेमें महात्माजीको लिखा भी था। जब सन् १९३० में महात्माजीके साथ यरवडा जेलमें रहकर मैं छूटा तब भी अिसकी बातचीत महात्माजीसे हुअी थी। अुन्होंने मुझसे कहा कि "आश्रमकी भजनावलिके भजनोंका स्वरांकन मैं जरूर चाहता हूं। लेकिन अैसे प्रकाशनोंके लिए आजके गड़बड़ीके दिन अनुकूल नहीं हैं। मैं पंडितजी-को नहीं लिखूंगा। बाहर जा ही रहे हो, तो पंडितजीको समझा देना कि समय अनुकूल होते ही यह काम हम जरूर करेंगे।"

सन् १९३० से ३८ तक स्वराज्यका आंदोलन, अहिंसक लड़ाअी, चालू ही रही और सन् १९३८ में खरे शास्त्रीका देहांत हुआ। वही अुनका अधूरा कार्य शास्त्रीजीकी लड़की चि० मथुरी और लड़का चि० रामचंद्रके द्वारा आज पूरा हो रहा है। नारायणरावके हरअेक कार्यका मैं पुरस्कार करता आया हूं। अुन्हींका अेक महत्वका कार्य अुनके शिष्य और तनुजोंके द्वारा जब पूरा हो रहा है तब अुसका पुरस्कार करते मुझे विशेष संतोष होता है।

आश्रमके लिअे दो समयकी प्रार्थनायें जितनी अनिवार्य हैं अुतना ही प्रार्थनाके लिअे अध्यात्म-भाववाही भारतीय संगीत भी आवश्यक है। अैसा अभिप्राय महात्माजीका और हम सब आश्रमवासियोंका था ही लेकिन संगीतका अभाव सबसे अधिक खटकता था आश्रमके व्यवस्थापक श्री मगनलालभाअी गांधीजीको। अिसकी चर्चा जब अुन्होंने मुझसे छेड़ी थी तब मैंने कहा "हमें अैसा आदमी चाहिये कि जो संगीत विद्यामें प्रवीण हो, और साथ साथ आश्रमके वातावरणको परिपुष्ट कर सके अैसा चारित्र्यवान् भक्त भी हो। संगीत-प्रवीण तो देशमें जगह जगह मिलेंगे। दूसरी कसौटीमें पार अुतरे अैसा संगीतज्ञ तो केवल श्री विष्णु दिगंबर पलुस्करजीकी संस्थासे ही मिलेगा। कॉलेजके

दिनोंमें मैं पलुस्कर बुवाको मिला हूं। अच्छे चारित्र्यवान हैं। पान तक नहीं खाते। राम भक्त भी हैं। और संगीत विद्यामें अिनसे बढ़कर शायद ही कोअी दूसरा आदमी आज देशमें जिंदा होगा।" मगनलालभाअीको मेरी सलाह जंची; बंबअी जाकर वहांके गांधर्व महाविद्यालयसे अेक संगीतशास्त्रीको ले आये; वही थे हमारे नारायण शास्त्री खरे। अिन्होंने आश्रममें और गुजरातमें भक्ति-प्रधान संगीतका अच्छा प्रचार किया। आश्रमकी प्रार्थनाओंके लिअे हिंदी, अुर्दू, गुजराती, मराठी और बंगाली भजनोंको पसंद करनेमें और अुनके राग तय करनेमें अिनका काफी हाथ था।

अेक दफे गांधीजीने कहा कि आश्रममें गाये जानेवाले भजनोंमें शुद्ध धार्मिकता होनी चाहिये। पुरुषार्थ-विनाशक नसीबवाद, परधर्मकी निंदा, हीन शृंगार आदि बातें नहीं होनी चाहिये अिस दृष्टिसे भजनोंकी पसंदगी होनेके बाद ही अुनको भजनावलिमें स्थान देना चाहिये।

भारतीय संगीतके बारेमें मैंने भातखण्डेजीका कुछ साहित्य पढ़ा था। जब मैं शान्तिनिकेतनमें था तब बंगाली संगीतकी भी थोड़ी जानकारी अिकट्ठा की थी। पंडित खरेके आनेसे संगीत-विद्याकी शास्त्रीय चर्चा काफी चली। अिसके फलस्वरूप पंडितजीने अनेक लेख लिखे, जिसका संग्रह नव-जीवन प्रकाशन मंदिरने सन् १९३८ में शाया किया है।

संगीत प्रेमियोंको भजनोंकी शास्त्रीय स्वरलिपि देनेका खरेजीका कार्य रह गया था सो अब पूरा हो रहा है। अिसमें महात्माजीके प्यारे भजन "वैष्णव जन" से प्रारंभ करके तुलसीदास, सूरदास, कबीरदास आदिके भजन तथा सिक्ख गुरुओंके "कहे नानक" वाले भजन यह सब शायद पहले भागमें आयेगा। आश्रम गुजरातमें था, गुजरातियोंकी संख्या अुसमें अधिक थी, अिसलिये भजनावलिमें गुजराती संतोंके भजनोंका अधिक होना स्वाभाविक है। साथ साथ मराठी, बंगाली आदि संत-कवियोंकी वाणी भी आ जायेगी। कुल मिला-कर सौ सवा सौ भजन हो गये तो काम पूरा गिना जायेगा।

अिन भजनोंका क्रम यहां भाषावार और संतवार दिया है। अेक तरह-से यह स्वाभाविक भी है। अगर चि० मधुरीने चाहा होता तो अिन भजनों-का क्रम वह संगीतके रागोंके अनुसार भी रख सकती थी। उनमें भी प्रथम सुबहके राग, बादमें दुपहरके राग, किसी दूसरे भागमें शामके रागसे प्रारंभ

करके मध्यरात्रि और उत्तररात्रिके रागोंसे समाप्ति कर सकती थी। अक ही रचना सर्वमान्य न भी हो। 'हर आवृत्तिमें रचनाक्रम अलग' अैसी भी व्यवस्था हम कर सकते हैं।

पंडित नारायणराव खरेने देशी और विदेशी संगीतकी स्वरलिपिका अध्ययन किया था। पश्चिमके संगीतका नोटेशन वहां सर्वमान्य है। भारतके लिअे भी वही संगीत-लिपि हम ले सकते थे। बड़ौदेके मौलाबक्षजीने अेक अपना ढंग चलाया। भातखंडेजीने अपने ग्रंथोंमें रागोंका स्वर-लेखन किया है। खरे शास्त्रीजीने अपने गुरु पलुस्करबुवाजीको पद्धति पसंद की है। व्यवहारकी दृष्टिसे सब पद्धतियाँ अच्छी ही हैं। गुरुकी मददके बिना कंठ्य संगीत सीखा नहीं जाता यह सिद्धांत है तो बराबर; तो भी अगर संगीत-लिपि व्यवहारकी दृष्टिसे परिपूर्ण रही तो गुरुकी मददके बिना भी, संगीतलिपि सामने रखकर, आदमी बहुत कुछ सीख सकता है। और सीखा हुआ दृढ़ करके नोटेशनकी मददसे दूसरोंको भी आसानीसे सिखा सकता है।

आश्रम-भजनावलिके कारण जो भजन देशमें बहुजन-मान्य हुअे हैं अुनमें से चुने हुअे सौ सवा सौ भजनोंकी स्वरलिपि देशके लिअे अुपलब्ध कराकर संपादकोंने संगीत-विद्याकी और राष्ट्रकी अुत्तम सेवा की है। मैं अुनका हार्दिक अभिनंदन करता हूं।

भारतमें अुत्तमोत्तम हिंदू-मुसलमान संगीताचार्योंकी परंपरा चालू है ही। अुसी परंपरामें पलुस्करजी तैयार हुअे। जैसा ग्वाल्हेर हिन्दुस्तानी संगीत विद्याका अेक केन्द्र है वैसे ही महाराष्ट्रमें सांगली-मिरजमें भी एक विख्यात केन्द्र है। पलुस्करजी वहांके। हमारे नारायणराव खरे भी वहांके। पलुस्करजीकी विशेषता अिस बातमें है कि अुन्होंने संगीत-विद्याको विलासिताके वायुमंडलसे बचाकर अुसका आधुनिक ढंगसे संगठन किया। गांधर्व महाविद्यालय अुनकी अुत्तम कृति थी। नारायणराव खरेने अपनी संस्थाके अच्छे अच्छे गुरुबंधुओंको लेकर अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय मंडलकी स्थापना की। (अपने कअी साथियोंकी अुन्होंने गुजरातमें स्थापना की) अुस मंडलके आज प्रमुख हैं श्री देवधर, जो बंबअीमें अपनी संस्था भी चलाते हैं। प्रस्तुत भजनावलिकी स्वरलिपिका काम अुन्होंने देखा है। और संपादक भाअी-बहनको अुनका आशीर्वाद प्राप्त है।

हिन्दुस्तानी संगीत भारतीय समन्वय वृत्तिकी ओजाद अथवा अुपज है। आर्योंकी संगीत परंपराकी दो शाखाअें हैं। भारतीय संगीत और ओराणी संगीत, मुगल कालमें अिन दोनोंका सहयोग हुआ। अैसे सहयोगसे जो समन्वय निष्पन्न हुआ वह है 'भारतीय आत्माको पूर्ण रूपसे व्यक्त करनेवाला' हिन्दुस्तानी संगीत।

अिस संगीतके सामने आयंदाके लिए बड़ा मिशन है —— कर्णाटकी संगीत, बांगला संगीत, गुजरातका लोक-संगीत आदि प्रादेशिक संगीतोंका हिन्दुस्तानी संगीतके साथ समन्वय करना। अैसे समन्वयका प्रारंभ गुजरातके लिअे नारायण-राव खरेने किया। यह काम अब सारे भारतमें जगह जगह चल रहा है। अेक दिन जरूर आयेगा जब अिन सब प्रयत्नोंका अेक महत्-समन्वय सिद्ध होगा। भजनावलिकी यह स्वरलिपि अिसी कार्यमें अपनी नम्र सेवा दे रहा है। समर्थ लोग प्रयत्नपूर्वक अिस दिशामें अग्रसर होंगे और युगकार्य करेंगे अैसा हमारा विश्वास है।

भजनावलिकी स्वरलिपिकी यह प्रवृत्ति महात्मा गांधीजीकी अखिल भारतीय आश्रम-प्रवृत्तिका ही अेक प्रयास और फल है। यह भी अिसकी अेक विशेषता है। हमें विश्वास है अिसी कारण यह प्रवृत्ति सब तरहसे सफल होगी।

काका कालेलकर

स्वर–ताल–लेखन पद्धतिका परिचय

मात्रा	चिह्न	चिह्नका नाम	लिखनेकी रीत
४	ऽ	च त स्त्र	सा ऽ
२	~	गु रू	रे ~
१	–	ल घु	म –
१/२	०	द्रु त	ग म ० ०
१/४	◡	अ णु द्रु त	ग म प ध ◡ ◡ ◡ ◡
१/८	◡◡	अ णु अ णु द्रु त	प ध नी सा ◡◡ ◡◡ ◡◡ ◡◡
१/३	〰	अेक मात्रामें ३ स्वर	म प ध 〰 〰 〰
१/६	〰〰	अेक मात्रामें ६ स्वर	ग म प ध नी सा 〰〰 〰〰 〰〰 〰〰 〰〰 〰〰
कोई चिन्ह नहीं		शुद्धस्वर	सा रे ग म प ध नी
	,	कोमलस्वर	रे् ग् ध् नी्
	मा	तीव्रस्वर	मा
स्वरके उपर बींदी · ·		मंद्रसप्तक	मं पं धं नों

।	स्वरके उपर खड़ी लकीर – तारसप्तक	सां रें गं मं
ऽ	उच्चारण (दीर्घस्वर)	सा ऽ
,	विश्रांति	ग ,
⌒	मींड	ध म (⌒)
१	'स म' – पहली मात्रा	प ध नी (१)
+	खाली	ध नी सा (+)
३–५–६	ताली – समके अलावा अंको पर दी जाने वाली ताली	सा नी ध प म ग (३ ५ ६)
|	आवर्तन पूरा होनेका चीह्न	| रे ग म प |
||	स्थाओ – गीताका पहला भाग पूरा होनेका चिन्ह	म ग रे सा ||
|||	अंतरा – गीतका दूसरा भाग पूरा होनेका चिन्ह	ध नी सा |||

ताल परिचय

ताल–तीनताल अथवा त्रीताल

मात्रा ८ ख़ंड ४ ताली १–३–७ मात्रापर खाली ५ वींपर

बोल

धा	धों	धीं	धा	धा	धीं	धीं	धा	धा	तीं	तीं	ता	ता	धीं	धीं	धा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१				३				+				७			

ताल–दृत अेकताल

मात्रा–६ खंड–६ ताली–१–३–५–६ मात्रापर खाली–२–४

धीं	धीं	धा	तृ	क	तू	ना	क	त्ता	धा	तृ	क	धी	ना
०	०	०	‿	‿	०	०	०	०	०	‿	‿	०	०
१		+			३		+		५			६	

ताल–दादरा

मात्रा–६ खंड–२ ताली–१ खाली–३

धा	धी	ना	धा	ती	ना
–	–	–	–	–	–
१			+		

ताल–केरवा

मात्रा–४ खंड–४ ताली–१–२–४ खाली–३

धा	गी	न	ती	न	क	धी	न
०	०	०	०	०	०	०	०
१		२		+		३	

ताल–धुमाळी

मात्रा–४ खंड–४ ताली–१–२–४ खाली–३

धीं धीं	धा तीं	तू क धीं	धा गी तू क
० ०	० ०	◡ ◡ ०	◡ ◡ ◡ ◡
१	२	+	४

ताल–हींच

मात्रा–४ खंड–२ ताली–१ खाली–३

धीं ऽ न् धी न क	तीं ऽ न् ती न क
~ ~ ~ ~ ~ ~	~ ~ ~ ~ ~ ~
१	+

ताल–रूपक

मात्रा–७ खंड–३ ताली–३–६ सम और खाली १–पहली मात्रा पर

ती ती ना	धी ना	धी ना
– – –	– –	– –
+	४	६

ताल–तेवरा

मात्रा–७ खंड–३ ताली–१–४–६ सम और खाली पहली मात्रा पर

धा धीं ता	की ट त क	ग दि ग न
– – –	० ० ० ०	० ० ० ०
१	४	६

ताल–दीपचंदी

मात्रा–१४ खंड–४ ताली–१–३–११ खाली–८

धा धीं ऽ	धा गी धीं ऽ	ता तीं ऽ	धा गी धीं ऽ
– – –	– – – –	– – –	– – – –
१	३	+	११

राग खमाज · तीन ताल

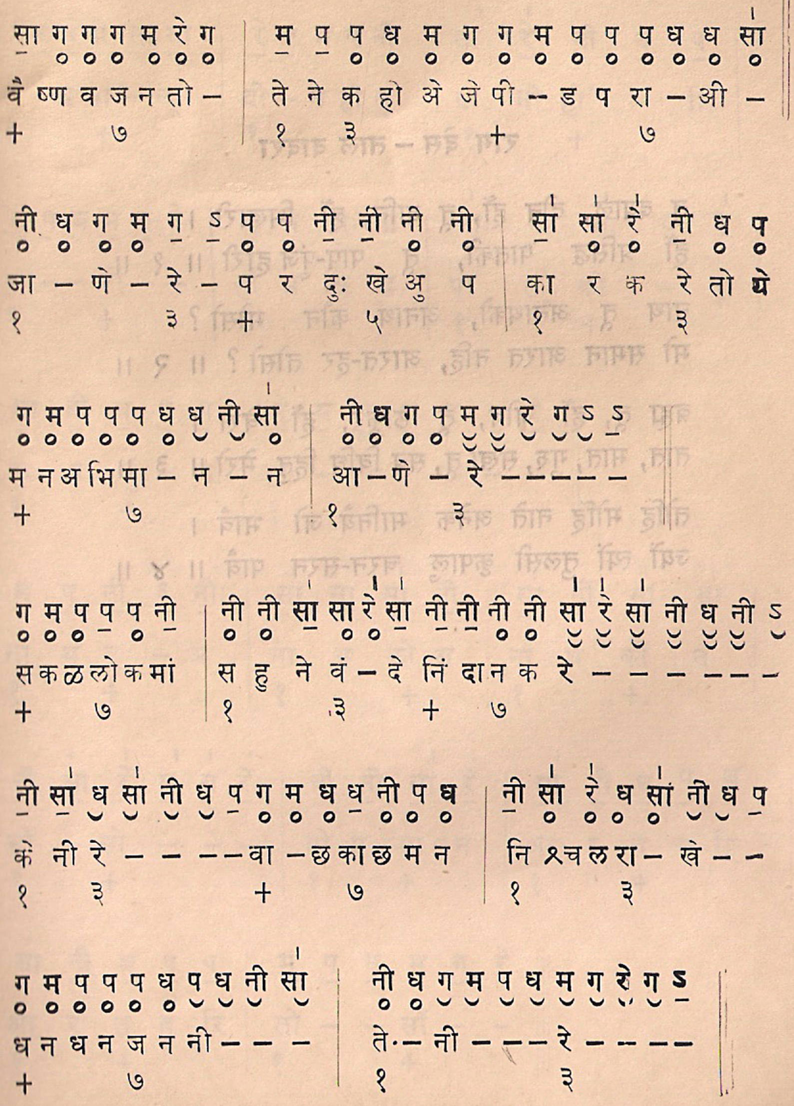
वैष्णव जन तो तेने कहीए, जे पीड पराई जाणे रे;
परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे. ध्रु०

सकळ लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे;
वाच काछ मन निश्चळ राखे, धन धन जननी तेनी रे. १

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे;
जिव्हा थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे. २

मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ वैराग्य जेना मनमां रे;
रामनामशुं ताळी लागी, सकळ तीरथ तेना तनमां रे. ३

वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध निवार्या रे;
भणे नरसैंयो तेनुं दरसन करतां, कुळ एकोतेर तार्या रे. ४



राग देस – ताल दादरा

तू दयालु, दीन हौं, तू दानि, हौं भिखारी ।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप-पुंज हारी ॥ १ ॥

नाथ तू अनाथको, अनाथ कौन मोसो ?
मो समान आरत नहि, आरत-हर तोसो ? ॥ २ ॥

ब्रह्म तू, हौं जीव, तू ठाकुर, हौं चेरो ।
तात, मात, गुरु, सखा तू, सब विधि हितु मेरो ॥ ३ ॥

तोहि मोहिं नाते अनेक मानियै जो भावै ।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु चरन-सरन पावै ॥ ४ ॥

रे ग रे नी सा सा	रे म म प नी	सां रें नी ध प
तू – द या – लू	दी – न हौ तू	दा नी हौं – भि
१ +	१ +	१ +

म प ध म ग रे	म प नी नी	सां नी सां ऽ रें
खा – – री – –	हौं प्र सि द्ध	पा त की – तू
१ +	१ +	१ +

सां नी ध प प	रे म प ध म ग रे
पा प पुं – ज	हा – – – री – –
१ +	१ +

म प नी ऽ नी	सां सां सां नी	सां नी सां सां
ना थ तू – अ	ना थ को अ	ना थ कौं न
१ +	१ +	१ +

नी सां रें मं गं रें	नी नी सां रें	सां नी ध प ध
मो – सो – – –	मो स मा न	आ र त न हिं
१ +	१ +	१ +

सां नी ध प प	म प ध म ग रे
आ र त ह रि	तो – – सों – –
१ +	१ +

राग खमाज—तीन ताल

माधव ! मोह-पास क्यों टूटै ?
बाहर कोटि उपाय करिय अभ्यन्तर ग्रन्थि न छूटै ॥

धृतपूरन कराह अन्तरगत ससि-प्रतिबिम्ब दिखावै ।
इंधन अगन लगाय कल्पसत औंटत नास न पावै ॥

तरु कोटर महँ बस विहंग तरु काटे मरै न जैसे ।
साधन करिय विचार-हीन मन, सुद्ध होइ नहिं तैसे ॥

अंतर मलिन विषय मन अति, तन पावन करिय पखारे ।
मरइ न उरग अनेक जतन बलमीक बिबिध विधि मारे ॥

तुलसिदास हरि गुरु-करुना बिनु, बिमल विवेक न होई ।
बिनु विवेक संसार-घोर-निधि पार न पावै कोई ॥

नी ध प ध नी सां नी ध प म ग म प ध | नी सां ध सां नी ध प ध नी सां
मा — — — ध व मो — ह पा — श क्यों | छू टे — — — — — — — —
३ + ७ | १ ३

ग म ध नी सां सां नी | सां सां रें नी सां ध सां नी ध प म ग ग म प ध |
बा — ह र को टि उ | पा य क रि य अ — भ्यं — — त र ग्रं — थि न |
+ ७ | १ ३ + ७ |

| नी सां ध नी प ध नी रें नी सां नी ध प म ग म प ध
| छू टे मा — — — ध — व — मो — ह पा — श क्यौं —
| १ ३ + ७

नी सां ध सां नी ध प ध नी सां ||
टू टे — — — — — — — — ||
१ ३ ||

ग म ध नी सां सां नी सां | ऽ सां नी सां रें रें सां सां नी नी ध ध प
धृ त पू — र न क रा | — ह अं — — त र ग त श शि प्र ति
+ ७ | १ ३ +

म प ध | ग प म ग रें ग ऽ ग ग ग ग ग ग रें | रें ग म म म
बीं ब दि | खा — वे — — — — औं ध न अ ग न ल | गा — — य क
७ | १ ३ + ७ | १

ग रें ग सा सा नी नी नी सा रें ग | रें सा रें सा नी सा नी ध नी
— — प श त ओ ट त ना श न | पा — — वे — — मा — —
३ + ७ | १ ३

प ध नी सां नी नी नी सां सां सां | ध सां नी ध प ध नी सां नी ध प म
धों — — — ओ ट त ना श न | पा — वे — — — — — — मो ह — पा
+ ७ | १ ३ +

ग म प ध | नी सां ||
— श क्यौं — | टू टे ||
७ | १ ||

राग परज – तीन ताल

यह विनती रघुवीर गुसाँई ।
और आस बिस्वास भरोसो, हरु जियकी जड़ताई ॥

चहौं न सुगति सुमति, संपति कछु, रिधि सिधि विपुल बड़ाई ।
हेतु-रहित अनुराग रामपद बढ़ै अनुदिन अधिकाई ॥

कुटिल करम लै जाइ मोहि जहँ जहँ अपनी बरिआई ।
तहँ तहँ जनि छिन छोह छाँड़िये कमठ-अण्डकी नाईं ॥

या जगमें जहँ लगि या तनुकी, प्रीति प्रतीति सगाई ।
ते सब तुलसिदास प्रभु ही सों होहिं सिमिटि इक ठाँई ॥

नी सां नी ध प मा प ध | मा प ऽ मा ग ग म प म ग ग ग मा नी ध मा ग
य ह बि न ति – र घु | बी – – र गु सा – – – ई औ र आ – स बि –
\+ ७ | १ ३ + ७

ग मा ध मा ग रे सा मा मा ध ध नी सां सां सां | ध नी नी ध नी
स्वा – – स भ रो सों ह रो जि य की – ज ड | ता – – – – –
१ ३ + ७ | १

ऽ रे नी ध प || ध मा ध नी सां सां सां | नी रे सां रे सां नी सां सां
– – अी – – || च हौं न सु ग ति सु | म ति सं – प ति क छु
३ || + ७ | १ ३

ध सां नी ध प मा प ध | प ऽ मा ग म प म ग ग ग मा नी ध मा ग
रि द्धि सि द्धि वि पु ल ब | डा – – – – – अी हे तु र हि त अ नु
\+ ७ | १ ३ +

ग मा ध ग ग मा ग रे सा मा मा ध ध नी सां सां सां | ध नी नी
रा – – ग रा – म प द ब ढै अ नु दि न अ धि | का – –
१ ३ + ७ | १

ध नी ऽ रे नी ध प ||
– – – – अी – – ||
३

राग पीलु – तीन ताल

रघुवर ! तुमको मेरी लाज ।
सदा सदा मैं सरन तिहारी, तुम बड़े गरीबनिवाज ।।
पतित-उधारन बिरुद तिहारो स्रवनन सुनी अवाज ।।
हौं तो पतित पुरातन कहिये, पार उतारो जहाज ।।
अघ-खंडन, दुख-भंजन जनके यही तिहारो काज ।।
तुलसिदास पर किरपा करिये भक्ति-दान देहु आज ।।

रे ग् सा रे प प ग् रे ग नीं सा नीं | सा ऽ सा रे म ग् रे सा नी सा
र घु व र तु म को – – मे – री | ला – ज र – घु – व – र
३ + ७ | १ ३

ध् प ध् नीं सा | रे ग् रे ग् सा रे ग् रे सा नीं सा ऽ ग ग ग ग सा |
स दा – स दा मैं | स र न ति हा – – – री – – – तु म ब डे ग |
+ ७ | १ ३ + ७ |

ग म प ध् प म ग् रे सा रे प ग् रे ग् सा नीं | सा ऽ सा रे ग् सा रे ||
री – ब – नि – वा – ज तु म को – – मे री | ला – ज र घु व र ||
१ २ + ७ | १ ३ ||

नीं सा ग म प प प | ग म प ध् प म ग् रे सा ग ग ग ग ग म प |
प ति त अु धा र न | बि रू द – ति – हा – रो श्र व ण न सु नी आ |
+ ७ | १ ३ + ७ |

म ग् म ऽ म ग् रे ग् सा रे प प ग् रे ग् सा नीं सा ऽ सा |||
वा – – – ज र – धु व र तु म को – – मे री ला – ज |||
१ ३ + ७ १ |||

राग भैरवी – तीन ताल

भज मन राम-चरण सुख-दाई ।।धु०।।

जिहि चरननसे निकसी सुर-सरी संकर-जटा समाई ।
जटासंकरी नाम पर्‍यो है, त्रिभुवन तारन आई ।।१।।

जिन चरननकी चरन-पादुका भरत रह्यो लव लाई ।
सोई चरन केवट धोय लीने तब हरि नाव चलाई ! ।।२।।

सोई चरन संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई ।
सोई चरन गौतम-ऋषि-नारी परसि परम-पद पाई ।।३।।

दंडक-वन प्रभु पावन कीन्हो ऋषियन त्रास मिटाई ।
सोई प्रभु त्रिलोकके स्वामी कनक-मृगा सँग धाई ।।४।।

कपि सुग्रीव बंधु-भय-व्याकुल तिन जय-छत्र धराई ।
रिपुको अनुज विभीषण निसिचर परसत लंका पाई ।।५।।

शिव-सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस मुख गाई ।
तुलसिदास मारुत-सुतकी प्रभु निज मुख करत बड़ाई ।।६।।

रे ग् रे सा सा रे ग म | रे् सा सा प प म प ध् प म रे् ग्
रा – म च र न सु ख | दा ई भ ज म न – – – – रा –
\+ ७ | १ २ +

रे् सा सा रे ग म | रे् सा ऽ
म च र न सु ख | दा ई –
७ | १ २

ध् ध् ध् म ध् ध् नी् | सां सां सां नी् सां रें सां ध् सां सां
जि हि च र न न से | नि क सि सु र स री शं क र
\+ ७ | १ ३ +

सां नि् सां रें सां | प नी् ध् प म प ऽ सा प ऽ प ऽ प ध् प
ज टा – – स | मा – ओ – – – – – ज टा – शं – क री –
७ | १ ३ + ७

म मा म ग् रे ग् ग् ग् प प प ध् नी् सां | प नी् ध् प म
ना म प र्‍यों – है त्रि भु व न ता – र न | आ – ई – –
१ ३ + ७ | १

रे ग् म प ध् प म रे ग् रे् सा सा रे् ग् म | रे् ऽ सा ऽ
भ ज म न – – – रा – म च र न सु ख | दा – ई –
३ + ७ | १ ३

राग बिभास—द्रुत चौताल (एक ताल)

जागिये रघुनाथ कुंवर । पंछी बन बोले ॥ धु ॥

चंद्र-किरण शीतल भई, चकई पिय मिलन गई,
त्रिविध मंद चलत पवन पल्लव-द्रुम डोले ॥ १ ॥

प्रात भानु प्रकट भयो, रंजनी को तिमिर गयो,
भृंग करत गुंज-गान कमलन दल खोले ॥ २ ॥

ब्रह्मादिक धरत ध्यान, सुर-नर-मुनि करत गान,
जागन की बेर भई नयन-पलक खोले ॥ ३ ॥

तुलसिदास अति अनंद निरखि के मुखारविंद,
दीनन को देत दान भूषण बहुमोले ॥ ४ ॥

प ध् प ग रे् सा रे् रे् ग रे् सा | प ग प प प प प ध् ग प ||
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ – ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ – ऽ ऽ – ऽ ऽ ऽ ऽ
जा – गि ये र घु ना थ कुं व र | पं – छी ब न बो ले – – –
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६

ग प प ध् ध् सा सा सा रे सा | ध् ध् सा रे रे सा रे् सा ध् प
– ऽ ऽ ऽ ऽ – ऽ ऽ ऽ ऽ | ऽ ऽ – ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ –
चं द्र कि र न शी त ल भ अी | च क अी पि या मि ल न ग अी
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६

ग ग ग़ प ऽ प प प ध् ध् ध् ध् | ग प ध् सां सां ध् प प ध् ग प ||
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ | – ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
त्रि वि ध मं – द च ल त प व न | प ल्ल व द्रु म डो – ले – – –
१ + ३ + ५ ६ | १ + ३ + ५ ६

राग आसावरी या तोड़ी – तीन ताल

ऐसो को उदार जग माहीं ।
बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोउ नाहीं ॥

जो गति योग विराग जतन करि नहिं पावत मुनि ग्यानी ।
सो गति देत गीध सबरी कहँ, प्रभु न बहुत जिय जानी ॥

जो संपति दस सीस अरपि करि रावन सिव पहँ लीन्ही ।
सो संपदा विभीषन कहँ अति सकुच सहित हरि दीन्ही ॥

तुलसिदास सब भाँति सकल सुख जो चाहसि मन मेरो ।
तौ भजु राम काम सब पूरन करहि कृपानिधि तेरो ॥

प सां ध् ध् प ध् म म प | म प ध् प म प ऽ रे म प सां ध्
ऐं सो को अु दा – र ज ग | मां – – – – – – – हों – अै सो को
\+ ७ | १ ३ +

ध् प ध् म म प | ध् ध् प म प ऽ रे म प ग् ग् ग् रे सा |
अु दा – र ज ग | मा – – – – – – ही – – बि नु से वा जो
७ | १ ३ + ७

ध् धं ऽ सा ऽ सा सा सा रे म म प ध् सां सां | नीं सां रें नीं ध् प ||
द्र वै – दी – न प र रा म स रि स को अु | ना – – – हीं –
१ ३ + ७ | १ ३

म प प ध् ध् ध् | सां सां सां नीं सां सां सां ध् ध् ध् सां सां सां
जो ग ति यो ग वि | रा ग ज त न क रि न हि पा – व त
\+ ७ | १ ३ + ७

सां रें | सां रें ग् ऽ रें सां ध् ध् ग् रें सां नि सां | रें रें नीं सां
मु नि | ज्ञा – – – नी – सो ग ति दे त गि – | – ध श ब
| १ ३ + ७ | १

ध् प प प ध् म म प ध् सां सां | नी सां रें नी ध् प
री क हँ प्र भु न ब हु त जि य | जा – – – नी –
३ + ७ | १ ३

प सां ध् ध् प ध् म रे म | प ध् ध् प म प ऽ रे म प |||
अै सो को अु दा – र ज ग | मां – – – – – – ही – –
\+ ७ | १ ३

राग भैरवी–पंजाबी ठेका, तीन ताल

सुने री मैंने निर्बलके बल राम ।
पिछली साख भरूँ संतनकी आड़े सँवारे काम ॥ ध्रु० ॥
जबलग गज बल अपनो बरत्यो नेक सरो नहि काम ।
निर्बल ह्वै बल राम पुकार्‌यो आये आधे नाम ॥
द्रुपद-सुता निर्बल भइ ता दिन गहलाये निज धाम ।
दुःशासनकी भुजा थकित भइ वसन रूप भये श्याम ॥
अप-बल, तप-बल और बाहु-बल चौथा है बल दाम ।
सूर किशोर कृपासे सब बल हारेको हरिनाम ॥

नीं सा रे ग् सा रे् | सा ऽ प म ध् प म ग् रे ग् सा रे
नि र्बं ल के ब ल | रा म् सु ने री मै ने नि – – र्बं ल
\+ ७ | १ ३ +

ग् सा रे् | सा ऽ सा सा रे् सा ध् नीं नीं | सा ग् रे ग् म ग
के ब ल | रा म् पि छ ली – सा ख भ | रू सं – त न की
७ | १ ३ + ७ | १ ३

ग् प प प ध् नी सां | प नी ध् प म ग् रे् सा नीं सा ऽ ऽ ||
आ डे सँ वा – रे – | का – – – – – – – – – म् – – ||
\+ ७ | १ ३

ग् म ध् नी सां सां रें सां | नी नी सां रें सां ध् प
ज ब ल ग ग ज ब ल | अ प नो ब र त्यो –
\+ ७ | १

प प प प ध् नी सां | ध् नी ध् प म प ऽ ऽ प प प म प ध् प म
ने क स रो – न हीं | का – – – – म् – – नि र्बं ल ह्वै – – ब ल
\+ ७ | १ ३ + ७

ग् प म ग् रे् सा सा प प ध् नी सां | प ध् नी सां गं रें सां नी
रा म पु – का र्यो आ ये आ – धे – | ना – – – – – – –
१ ३ + ७ | १

ध् प म ग् रे् सा नीं सा ||
– – – – – – – म् ||
३

राग गारा ताल धुमाळी

अँखियाँ हरि दरसनकी प्यासी ।
देख्यो चाहत कमलनैनको
निसिदिन रहत उदासी ॥ १ ॥
आये ऊधो फिरि गये आंगन
डारि गये गर फाँसी ॥ २ ॥
केसरि-तिलक मोतिनकी माला
वृन्दावनको वासी ॥ ३ ॥
काहूके मनकी कोऊ न जानत
लोगनके मन हांसी ॥ ४ ॥
सूरदास प्रभु ! तुमरे दरस बिन
लेहौं करवत कासी ॥ ५ ॥

धं | नीं रे रे ग् रे | ग् सा रे नीं सा | नीं धं मं पं धं |
अ | खि यां ह रि – | – द र स न | की – – प्या – |
| १ २ + ४ | १ २ + ४ | १ २ + ४ |

सा ऽ धं | नीं रे रे सा रे ग म | ग म रे ग् सा रे |
सी – अ | खि यां ह रि – – – | – – द र स न |
१ + ४ | १ २ + ४ | १ २ + ४ |

सा नीं सा धं नीं | सा ऽ ||
की – प्या – | सी – ||
१ २ + | १ ४ ||

धं सा रे | सा रे ग म ग ग | ऽ ग म ग म | रे ग् सा ऽ |
दे ख्यो – | चा – – – ह त | – क म ल न | य न को – |
१ + ४ | १ २ + ४ | १ २ + ४ | १ २ + ४ |

धं नीं धं नीं | सा सा रे प | ग् रे ऽ | ऽ रे ग् सा रे |
– नि स दि न | र ह त अु | दा सी – | – ह रि द र |
१ २ + ४ | १ २ + ४ | १ + ४ | १ २ + ४ |

नीं सा नीं धं पं मं | पं धं सा ऽ |||
स न की – – – | प्या – सी – |||
१ २ + ४ | १ २ + ४ |||

राग काफी–ताल धीमा त्रिताल

अबकी टेक हमारी । लाज राखो गिरिधारी ॥ ध्रु० ॥
जैसी लाज राखी अर्जुनकी भारत-युद्ध मँझारी ।
सारथि होके रथको हाँको चक्र सुदर्शन-धारी ॥
भक्तनकी टेक न टारी ॥ १ ॥

जैसी लाज राखी द्रौपदीकी होन न दीनि उधारी ।
खैंचत खैंचत दोउ भुज थाके दुःशासन पचिहारी ॥
चीर बढायो मुरारी ॥ २ ॥

सूरदासकी लाज राखो, अब को है रखवारी ?
राधे राधे श्रीवर प्यारो श्रीवृषभान दुलारी ।
शरण तक आयो तुम्हारी ॥ ३ ॥

’ सा रे रे ग॒ सा रे म म | प प प ध म म प ध नी सां
– अ ब की टे – – क ह | मा री ला – ज़ रा खो – – –
\+ ७ | १ ३ +

नी॒ प म प ग॒ रे | ऽ ग॒ सा रे ऽ निं सा ऽ ||
गि रि धा – री – | – – – – – – – – ||
७ | १ ३

ग॒ रे ’ रे ऽ ग॒ | रे सा रे नी॒ ध प ’ प प ऽ ध सां
जै सी – ला – ज | रा – खी – – – – अ र – जु न
\+ ७ | १ ३ +

सां रें सां रें ग॒ | ऽ रें ग॒ रें सां नी सां ऽ ऽ नि सां रें नी॒ नी॒ ध म प ध |
की – – – – | – – – – – – – – – भा – – र त यु –द्ध मँ |
७ | १ ३ + ७ |

नी॒ सां ध नी सां सां ध ध ध ध ध सां नी॒ ध प ध ऽ |
झा – – – – री सा र थि हो के – – – – – |
१ ३ + ७ |

नी नी सां रें ध सां नी॒ ध प ध ऽ प नी नी नी सां नी सां सां |
र थ को – हाँ – – – – – – – को च क्र सु द – र्श न |
१ ३ + ७ |

नी॒ नी॒ सां नी॒ नी॒ ऽ ध प ऽ ’ ध प ध म प ध नी॒ सां |
धा री – – – – – – – – – भ क्त न की टे – – – |
१ ३ + ७ |

ऽ नी॒ प ग॒ रे सा ||
– क न टा री – ||
१ ३

राग देश–तीन ताल

छाँड़ि मन, हरि-बिमुखनकौ संग ।
जिनके संग कुबुधि उपजत है, परत भजनमें भंग ॥
कहा होत पय-पान कराये, विष नहिं तजत भुजंग ।
कागहिं कहा कपूर चुगाये, स्वान न्हवाये गंग ॥
खरको कहा अरगजा-लेपन, मरकट भूषन अंग ।
गजको कहा न्हवाये सरिता, बहुरि धरै खहि छंग ॥
पाहन पतित बान नहिं बेधत, रीतो करत निषंग ।
सूरदास खल कारी कामरि चढ़त न दूजो रंग ॥

म रे म प सां नी ध प म ग नीं सा | रे ग म ग रे म रे म प
छां डो म न ह रि वि मु ख न को – | सं – – – ग छां डो म न
३ + ७ | १ ३

रे प म ग रे ग सा सा | नों पं नीं सा रे ग नीं सा
जि न के – सं – ग कु | बु धि अु प ज त है –
+ ७ | १ ३

म रे म म प प प नी सां रें | नी ध प ध
प र त भ ज न में – – – | भं – – ग
+ ७ | १

म म प नी नी नी नी | सां सां सां रें नी सां
क हाँ – हो त प य | पा न क रा – ये
+ ७ | १ ३

प प नी नी सां सां सां सां | प नी सां रें ऽ नी ध प
वि ष न हिं त ज त भु | जं – – – – – – ग
+ ७ | १ १

प रें रें रें रें गं मं गं रें | नी सां रें नी सां सां
का ग हिं क हाँ – – क र | पू र चु गा – ये
+ ७ | १ ३

नी नी नी सां सां | प नी सां रें सां नी ध प
स्वा न न्हा ये | गं – – – – – – ग
+ ७ | १ ||

राग बागेश्री–तीन ताल

सब दिन होत न एक समान ।
एक दिन राजा हरिश्चन्द्र गृह, संपति मेरु समान ।
एक दिन जाय स्वपच गृह सेवत, अंबर हरत मसान ।। १ ।।

एक दिन दूलह बनत बराती, चहुँ दिसि गढ़त निसान ।
एक दिन डेरा होत जंगलमें, कर सूंघे पगतान ।। २ ।

एक दिन सीता रुदन करत है, महा विपिन उद्यान ।
एक दिन रामचन्द्र मिलि दोऊ, बिचरत पुष्प विमान ।। ३ ।।

एक दिन राजा राज जुधिष्ठिर, अनुचर श्री भगवान ।
एक दिन द्रौपदि नगन होत है, चीर दुसासन तान ।। ४ ।।

प्रगटत है पूरबकी करनी, तज मन सोच अजान ।
सूरदास गुन कहँ लगि बरनौं, बिधिके अंक प्रमान ।। ५ ।।

म म प ध म ग् रे सा ध ध प ध | सां नी नी ध म प ध
स ब दि न हो – त न अे क स – | मा – न स ब दि न
३ + ७ | १ ३

ग् ग् रे सा ध ध प ध | सां नी ध म म ||
हो – त न अे क स – | मा – – – न
+ ७ | १ ३

ग म ध नी सां सां | सां नि सां रें सां नी सां नी ध
अे क दि न रा जा | ह रि – – श्चं – द्र गृ ह
+ ७ | १ ३

ध ध ध ध नी प ध | सां नी ध सां सां
सं प ति मे – रू स | मा – – – न
+ ७ | १ ३

ध नी सां मं ग् रें सां | नी सां रें सां नी सां नी ध
अे क दि न जा य स्व | प च गृ ह से – व त
+ ७ | १ ३

ध ध ध ध नी प ध | सां नी नी ध म प ध ||
अं ब र ह र त म | सा – न स ब दि न
+ ७ | १ ३

राग कल्याण–तीन ताल

चरन-कमल बन्दौं हरि राई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै; अंधेको सब कछु दरसाई ॥
वहिरो सुनै; मूक पुनि बोलै; रंक चलै सिर छत्र धराई ॥
सूरदास स्वामी करुनामय बार-बार बन्दौं तेहि पाई ॥

नीं रे ग रे नीं रे सा | नीं धं नीं रे ग ग ग ग रे ग प ऽ रे
च र न क म ल ब | न्दो – ह रि रा अी जा की – कृ पा ⁄ पं
\+ ७ | १ ३ + ७

ऽ रे ग रे नीं रे सा नीं रे ग म् ध | नी सां नी ध पध पम् ग ऽ सा
– गु गि रि लं – घै अ न्धे को स ब | क छु द र सा – – अी ⁄ –
१ ३ + ७ | १ ३

ग ग म् ध नी सां ऽ नी | ऽ रें गं रें सां नी ध प ग ग ग म् ऽ नी
ब हि रो – सु ने – मु | – क पु नि बो – ले – रं क च लै शि र
\+ ७ | १ ३ + ७

ध नी सां नी ध प म् ग म् प ग ग ग ग ग रे
छ – – त्र ध रा – – – अी सू र दा स स्वा –
१ ३ + ७

ग म् प ग रे नीं रे सा सा नीं रे ग म् ध नी
मी – – क रू ना – म य बा र बा र ब –
१ ३ + ७

म् ध नी सां नी ध म् ध प म् ग रे सा
न्दों – – – ते हि पा – – – अी – –
१ ३

राग दरबारी कानडा–तीनताल

घूंघटका पट खोल रे ! तोको पीव मिलेंगे।
घट घटमें वह साँई रमता कटुक वचन मत बोल रे॥
धन-जोबनको गरब न कीजै झूठा पचरँग चोल रे।
सुन्न महलमें दियना बारिले आसनसों मत डोल रे॥
जाग जुगुतसों रंग-महलमें पिय पायो अनमोल रे।
कहै कबीर आनन्द भयो है, बाजत अनहद ढोल रे॥

मं पं सा सा रे सा रे | ग म रे सा रे सा ऽ
धूं घ ट का प ट – | खो – ल – रे – –
+ ७ | १ ३ +

नीं सा रे ग म रे सा | नीं सा रे सा धं नीं पं ||
तो को पी – – व मि | लें – – – गे – – ||
७ | १ ३

’म प ध नी सां सां सां | नी सां रें रें सां नी सां ध नी
– घ ट घ ट में व ह | सां – – ई – र म ता –
+ ७ | १ ३

नी नी प प प म प नी म प | ग म रे सा रे सा ऽ नीं सा
क टु क व च न म – त – | बो – ल – रे – – तो को
+ ७ | १ ३ +

रे ग म रे सा | नीं सा रे सा धं नीं पं ||
पी – – व मि | लें – – – गे – – ||
७ | १ ३

राग भैरवी – तीन ताल

झीनी झीनी बिनी चदरिया ॥ ध्रु० ॥

काहे कै ताना, काहे कै भरनी
कौन तारसे बिनी चदरिया ॥

इंगला पिंगला ताना भरनी
सुषमन तारसे बिनी चदरिया ॥

आठ कँवल दस चरखा डोलै
पाँच तत्त, गुन तिनी चदरिया ॥

साँईको सोयत मास दस लागै
ठोक ठोकके बिनी चदरिया ॥

सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी
ओढ़ीके मैली कीनी चदरिया ॥

दास कबीर जतनसे ओढ़ी
ज्योंकी त्यों धरि दीनी चदरिया ॥

रे	सा	ध	नी	सा	रे	ग	म	|	रे	ग	ऽ	म	ग	रे	सा	‖
झ	नी	झि	नी	झि	नी	झि	नी	|	बि	नी	–	च	द	रि	या	‖
+				७				|	१			३				‖

सा	सा	रे	ग	म	|	ग	प	म	ग	रे	सा	प	प	म	प	ध	प	म
का	हे	का	ता	ना	|	का	है	कि	भ	र	नी	कौ	न	ता	–	–	र	से
+		७			|	१			३			+				७		

ग	ग	म	प	म	ग	रे	सा	‖
बि	नी	–	–	च	द	रि	या	‖
१				३				‖

राग मालकंस—झपताल

शूर संग्रामको देख भागै नहीं,
देख भागै सोई शूर नाहीं ॥

काम औ' क्रोध, मद, लोभसे जूझना,
मँडा घमसान तहँ खेत माहीं ॥

शील औ' शौच, संतोष साही भये,
नाम समसेर तहँ खूब बाजे ॥

कहै कबीर कोइ जूझि है शूरमा,
कायराँ भीड़ तहँ तुरत भाज़ै ॥

सां ऽ सां ध् म ध् नी ध् म | ग् सा सा ध् नीं सा म म म |
शू — र सं — ग्रा — म को | दे — ख भा — गे — न हिं |
१ ३ + ८ | १ ३ + ८

ग् म ध् नी सां सां सां | सां नी सां ध् म ग् म म ध् ध् नी
दे ख भा गे — सो ही | शू — र ना — हीं — — — — —
१ ३ + ८ | १ ३ + ८

नी सां ध् नी सां ||
— — — — — ||

ग् म ध् नी सां सां सां सां | नी नी सां ध् नी ध् म |
का म औ र क्रो ध म द | लो भ से झू — झ ना |
१ ३ + ८ | १ ३ + ८

नी नी सां ग् सां ग् मं ग् सां सां | सां नी सां
मँ डा — ध म सा — न त हँ | खे — त
१ ३ + ८ | १ ३

ध् म ग् म म ध् ध् नी नी सां ध् नी सां ||
माँ — ही — — — — — — — — — — ||
+ ८

राग कालिंगड़ा—तीन ताल

मन लागो मेरो यार फकीरीमें।
जो सुख पावो राम भजनमें
सो सुख नाहिं अमीरीमें ॥ १ ॥
भला बुरा सबका सुनि लीजै
कर गुजरान गरीबीमें ॥ २ ॥
प्रेम-नगरमें रहनि हमारी
भलि बनि आई सबूरीमें ॥ ३ ॥
हाथमें कूंडी, बगलमें सोटा
चारों दिसि जागीरीमें ॥ ४ ॥
आखिर यह तन खाक मिलेगा
कहाँ फिरत मगरूरीमें? ॥ ५ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो
साहिब मिलै सबूरीमें ॥ ६ ॥

प	ध्	म	प	ध्	प	म	ग	म	प	ध्	नी	सां	नी	ध्	प	ऽ
म	न	ला	–	गो	–	मे	रो	या	र	फ	की	–	री	–	में	–
		+						७			१				३	

ग	म	ग	रे्	ग	म	प	ग	म	प	म	ग	रे्	रे्	सा
जो	–	सु	ख	पा	–	वो	रा	–	–	म	भ	ज	न	में
+				७			१					३		

सा	रे्	ग	म	प	प	ध्	प	ध्	नी	सां	नी	ध्	प
सो	–	सु	ख	ना	हि	अ	मी	–	–	–	री	–	में
+				७			१						३

प	ध्	प	ध्	नी	सां	सां	सां	रें्	सां	रें्	नी	सां
भ	ला	–	बु	रा	स	ब	को	–	सु	न	ली	जे
+				७			१				३	

ध्	ध्	ध्	ध्	ध्	प	ध्	प	ध्	नी	सां	नी	ध्	प
क	र	गु	ज	रा	न	ग	री	–	–	–	बी	–	में
+				७			१						३

राग केदार–तीन ताल

तू तो राम सुमर जग लडवा दे ।। ध्रु० ।।

कोरा कागज काली स्याही, लिखत पढत वाको पढवा दे ।। २ ।।

हाथी चलत है अपनी गत मो, कुतर भुकत वाको भुकवा दे ।। ३ ।।

कहत कबीर सुनो भाई साधू नरक पचत वाको पचवा दे ।। ४ ।।

ध	प	म	ग	म	रे	सा	सा	रे	सा	सा	म	म	म	ग	प
तू	तो	रा	–	–	म	सु	म	र	ज	ग	ल	ड़	वा	–	दे
		+					७				१				३

प	सां	सां	सां	नी	ध	नी	सां	रे	सां	नी	ध	प
को	रा	का	ग	ज	का	–	ली	–	स्या	–	ही	–
+		७			१				३			

मा	प	ध	सां	ध	ध	प	प	प	मा	ध	प	म
लि	ख	त	प	ढ	त	वा	को	प	ढ	वा	–	दे
+				७				१				३

राग आसा–दीपचंदी

ठाकुर तुम शरणाई आया।
उतरि गयो मेरे मनका संशा
जबते दरशन पाया ॥ ध्रु० ॥

अनबोलत मेरी बिरथा जानी
अपना नाम जपाया।
दुख नाठे सुख सहजि समाये
आनंद आनंद गुण गाया ॥ १ ॥

बाँह पकरि कढ़ि लीने अखुने
गृह अंध कूपते माया।
कहु नानक गुरु बन्धन काटे
बिछुरत आनि मिलाया ॥ २ ॥

ध ऽ म म प प ऽ ध प ध | सा ऽ सा ऽ नी सा ऽ ध ऽ |
~ – ~ ~ – – – ~ – – | ~ – ~ ~ – – – ~ ~ |
ठा – कु र तु म – श र – | णा – अी – आ – – या – |
१ ४ + ११ | १ ४ + ११ |

सा सा सा सा नी सा नी ध प | ध प म ग रे सा रे ग सा सा |
– ~ ~ ~ – – – ~ ~ | – ~ – – ~ o o ~ ~ ~ |
अु त र ग यो – – मे रे | म न का – – सं – – श य |
१ ४ + ११ | १ ४ + ११ |

रे रे म म प प ध प ध | सा ऽ ऽ प ध सा रे ग रे सा नी ध प म ग रे सा ||
– ~ ~ ~ – ~ ~ – – | ~ – × o o o o o o o o o o o o o o ||
ज ब ते रा द र श न – | पा – –या – – – – – – – – – – – – – ||
१ ४ + ११ | १ ४+ ११ ||

प प ध प ध सा सा ऽ सा सा | रे रे रे ऽ सा ग रे ग ऽ सा नी ध |
– ~ ~ – – – – – ~ ~ | – ~ ~ ~ o o o o – ~ – – |
अ न बो – – ल त – मे री | बि र था – जा – – – – – नी – – |
१ ४ + १ | १ ४ + ११ |

ध ध ध ऽ नी ऽ प ध | प ध नी सा ऽ ऽ नी सा ऽ ध ऽ |
– ~ ~ ~ ~ – ~ ~ | o o o o – × – – – ~ ~ |
अ प ना – ना – म ज | पा – – – – – – – – या –. |
१ ४ + ११ | १ ४ + ११ |

ध ऽ ग म प प ऽ ध नी | सा ऽ सा सा नी सा ऽ ध ऽ ||
~ – ~ ~ – – – ~ ~ | ~ ~ ~ ~ – – – ~ ~ ||
ठा – कु र त व – श र | णा – ओी – आ – – या – ||
१ ४ + ११ | १ ४ + ११ ||

राग मल्हार–तीन ताल

साधो मनका मान त्यागो।

काम क्रोध संगत दुर्जनकी, ताते अहनिस भागो ॥ ध्रु० ॥

सुख दुख दोनों सम करि जानै, और मान अपमाना।

हर्ष शोक ते रहै अतीता, तिन जग तत्त्व पिछाना ॥ १ ॥

अस्तुति निन्दा दोऊ त्यागे, खोजै पद निरवाना।

जन नानक यह खेल कठिन है, कोऊ गुरु–मुख जाना ॥ २ ।

म प ध नी सां नी प ग म रे सा | रे सा नीं नीं सा |
० ० ◡ ◡ ० ० ० – ० – ० | – – ० ० – |
सा – धो – – म न का – मा न | त्या गो – – – |
३ + ७ | १ ३ |

नीं नीं सा सा सा | रे प ग म रे रे सा |
– ० – ० – | ० ० ० ० ० ० – |
म क्रो ध सं | ग त दु र ज न की |
+ ७ | १ ३ |

रे प प प प प | म प ध नी सां || म रे प प प नी ध
– – ० ० ० ० | ० ० ◡ ◡ ० || ० ० ० ० – ० ०
ता ते अ ह नि स | भा – गो – – || सु ख दु ख दो नों –
+ ७ | १ || + ७

| नी नी सां नी सां सां नी ध नी सां सां सां सां |
| ० ० ० ० – – – ० ० ० ० ० ० |
| स म क रि जा नै औ र मा – न अ प |
| १ ३ + ७ |

नी सां रें सां नी सां ऽ नी म प प रें रें रें रें |
◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ◡ ० – ० ० – ० – ० – |
मा – – – – – – ना – – ह र्ष शो क ते |
१ ३ + ७ |

गं गं मं रें सां म रे प प प प प | म प ध नी सां ||
० – ० – – ० ० ० ० – ० ० | ० ० ◡ ◡ ० ||
र हे अ ती ता ति न ज ग त त्व पि | छा – ना – – ||
१ ३ + ७ | १ ||

राग शंकरा–ताल तेवरा

बिसर गई सब तात पराई।
जब ते साध-संगत मोहिं पाई ॥ ध्रु० ॥

ना को बैरी नाहि बिगाना,
सकल संगि हमको बनि आई ॥ १ ॥

जो प्रभु कीन्हो सो भल मान्यो,
एक सुमति साधुन तें पाई ॥ २ ॥

सब महँ रम रहिया पभु एकै,
पेखि पेखि नानक बिगसाई ॥ ३ ॥

	ˈ						│								│					│
नी	सा	नी	प	प	ग	रे	│	ग	प	ग	रे	सा	रे	सा	│	सा	ग	ग	प	नी │
–	–	–	–	–	–	–	│	–	–	–	–	–	–	–	│	–	–	–	˜	˜ │
बि	स	र	ग	अी	स	ब	│	ता	–	त	प	रा	–	अी	│	ज	ब	ते	सा	धो │
१			४		६		│	१			४		६		│	१			४	६ │

ˈ	ˈ	ˈ	ˈ					ˈ	ˈ	‖
सा	ग	रे	सा	नी	प	प	नी	सा	रे	‖
–	–	–	–	○	○	○	○	○	○	‖
सं	ग	त	पा	–	–	ई	–	–	–	‖
१			४			६				‖

	ˈ	ˈ	ˈ	ˈ	│	ˈ	ˈ	ˈ	ˈ	ˈ	ˈ	ˈ	│	ˈ	ˈ	ˈ	ˈ	ˈ	ˈ	ˈ
प	सा	सा	सा	सा	│	सा	सा	सा	सा	ग	रे	सा	│	सा	ग	ग	ग	ग	ग	रे
–	–	–	˜	˜	│	–	–	–	–	○	○	˜	│	–	–	–	–	–	–	–
ना	को	अी	बै	री	│	ना	हि	बि	गा	–	–	ना	│	स	क	ल	सं	ग	ह	म
१			४		│	१			४			६	│	१			४		६	

ˈ	ˈ	ˈ	ˈ	ˈ					ˈ	ˈ	‖
ग	प	ग	रे	सा	नी	प	प	नी	सा	रे	‖
–	–	○	○	–	○	○	○	○	○	○	‖
री	–	ब	नि	आ	–	–	ई	–	–	–	‖
१				४			६				‖

राग शंकरा–तीन ताल

काहे रे! बन खोजन जाई।

सर्व-निवासो सदा अलेपा, तोही संग समाई ॥ ध्रु० ॥

पुष्प मध्य ज्यों बास बासत है मुकुर माहिं जस छाई!

तैसे ही हरि बसै निरंतर, घट ही खोजो भाई ॥ १ ॥

बाहर भीतर एकै जानै, यह गुरु ज्ञान बताई।

जन नानक बिन आपा चीन्हे, मिटै न भ्रमकी काई ॥ २ ॥

नी	ध	नी	सां	नी	प	प	|	ग	रे	ग	प	ग	रे	सा
○	○	○	○	−	○	○	|	○	○	○	○	○	○	−
का	−	हे	−	रे	ब	न	|	खो	−	ज	न	जा	−	ई
+				७			|	१				३		

सा	सा	सा	सा	ग	रे	|	ग	प	ऽ	प	प	प
−	○	−	○	○	○	|	○	○	○	○	−	−
स	वं	नि	वा	सी	−	|	स	दा	−	अ	ले	पा
+			७			|	१				३	

नी	ध	नी	सां	नी	प	ग	|	प	नी	ध	सां	नी	प	ग	प ‖
○	○	○	○	−	○	○	|	○	○	○	○	−	◡	◡	○
तो	−	ओ	−	सं	ग	स	|	मा	−	−	−	ओ	−	−	−
+				७			|	१				३			

प	सां	सां	सां	सां	|	सां	सां	सां	सां	रें	सां
−	○	−	○	−	|	−	○	○	○	○	−
पु	ष्प	म	ध्य	ज्यों	|	बा	स	ब	स	त	है
+		७			|	१			३		

नी	नी	सां	नी	नी	प	प	|	प	नी	ध	सां	नी	ऽ
○	○	○	−	○	○	○	|	○	○	○	○	−	−
मु	कु	र	मा	हि	ज	स	|	छा	−	−	−	ओ	−
+			७				|	१				३	

सां	गं	गं	पं	गं	रें	|	नी	सां	सां	नी	प	प
−	−	○	○	○	○	|	○	−	○	−	○	○
तै	से	ही	−	ह	रि	|	ब	से	नि	रं	त	र
+		७				|	१			३		

सा	सा	ग	प	नी	|	सां	गं	सां	नी	प	ग	प ‖
○	○	−	−	−	|	−	−	○	○	○	◡	◡
घ	ट	ही	खो	जो	|	भा	−	ओ	−	−	−	−
+		७			|	१		३				

राग कौशिया–ताल कहरवा

सुमरन कर ले मेरे मना।
तेरि बिति जाति उमर, हरिनाम बिना॥ ध्रु०॥
कूप नीर बिनु, घेनु छीर बिनु धरती मेह बिना।
जैसे तरूवर फल बिन हीना, तैसे प्राणी हरिनाम बिना॥
देह नैन बिन, रैन चन्द बिन, मन्दिर दोप बिना।
जैसे पंडित वेद बिहीना, तैसे प्राणी हरिनाम बिना॥
काम क्रोध मद लोभ निहारो छाँड़ दे अब संतजना।
कहे नानकशा, सुन भगवंता या जगमें नहिं कोई अपना॥

पं	पं	नीं	नीं	सा	सा	सा	नीं	धं	नीं	|	सा	रे	गं	सा	नीं
○	○	○	○	○	○	‿	‿	‿	‿	|	–	○	○	–	–
सु	म	र	न	क	र	ले	–	–	–	|	मे	रे	म	ना	–
१		२		+		४				|	१	२		+	४

पं	पं	नीं	नीं	सा	सा	सा	नों	धं	नी	|	सा	रे	ग	नीं	सा	नीं	नीं
○	○	○	○	○	○	‿	‿	‿	‿	|	–	○	○	○	○	○	○
सु	म	र	न	क	र	ले	–	–	–	|	मे	रे	म	ना	–	ते	री
१	२			+		४				|	१	२		+		४	

नीं	सा	रे	रे	ग	म	प	|	म	ग	रे	नीं	सा	रे	ग	म	|	ग	ऽ	सा	नीं
○	○	○	–	○	○	○	|	○	‿	‿	○	○	–	○	○	|	–	–	–	–
बि	–	ति	जा	त	अु	म	|	र	–	–	ह	रि	ना	म	बि	|	ना	–	–	–
१		२	+		४		|	१			२		+	४		|	१	२	+	४

रे	ग	सा	रे	ग	ग	ग	ग	|	म	म	म	ग	रे	ग	रे	रे
○	○	○	○	○	○	○	○	|	–	○	‿	‿	○	○	○	○
कू	–	प	नि	–	र	बि	न	|	धे	नु	छी	–	–	र	बि	न
१		२		+		४		|	१	२			+		४	

नि	सा	रे	रे	ग	ग	प	|	म	ग	नीं	सा	रे	ग	प	म	ग	रे	सा	नीं
○	○	–	○	○	○	○	|	○	○	○	○	‿	‿	‿	‿	‿	‿	‿	‿
ध	र	ती	मे	–	ह	बि	|	ना	–	रे	म	न	–	–	–	–	–	–	–
१		२	+		४		|	१		२		+				४			

नीं	नों	नीं	सा	धं	नीं	|	सा	सा	रे	ग	नीं	रे	सा	नीं	धं
–	–	○	○	○	○	|	○	○	○	○	○	○	‿	‿	○
जै	से	त	रू	व	र	|	फ	ल	बि	न	ही	–	ना	–	–
१	२	+		४		|	१		२		+		४		

नों	सा	रे	रे	ग	ग	प	|	म	ग	नों	सा	रे	ग	प	म	ग	रे	सा	नों
○	○	–	○	○	○	○	|	○	○	○	○	‿	‿	‿	‿	‿	‿	‿	‿
तै	–	से	प्रा	णो	ह	रि	|	ना	–	म	बि	ना	–	–	–	–	–	–	–
१		२	+		४		|	१	२			+				४			

४

राग तिलक कामोद–ताल कहरवा

पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो ॥ टेक ॥

वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरू,
किरपा कर अपनायो ॥ १ ॥

जनम जनमकी पूंजी पाई,
जगमें सभी खोवायो ॥ २ ॥

खरचै न खूटे, वाको चोर न लूटे,
दिन दिन बढ़त सवायो ॥ ३ ॥

सतकी नाव, खेवटिया सतगुरू,
भव सागर तर आयो ॥ ४ ॥

मीरांके प्रभु गिरधर नागर
हरख हरख जस गायो ॥ ५ ॥

पं | धं सा सा रे रे ग सा रे | ऽ रे प ऽ म म | ग सा ऽ रे ग |
– | o o o o o o o o | – o o o o – | – – o o – |
पा | यो – जी – मैं – ने – | – रा – – म र | त न – ध न |
| १ २ + ४ | १ २ + ४ | १ २ + ४ |

सा ऽ सा पं | धं सा सा रे रे ग सा रे | ऽ रे म प ध ऽ म म |
– – – – | o o o o o o o o | – ‿ ‿ ‿ ‿ o o – |
पा – यो पा | यो – जी – मै – ने – | – रा – – – – म र |
१ २ + ४ | १ २ + ४ | १२ + ४ |

ग सा ऽ रे ग | ग ऽ सा ऽ ||
– – o o – | – – – – ||
त न – ध न | पा – यो – ||
१ २ + ४ | १ २ + ४ ||

रे ऽ म म | प ऽ प प | रे म प ध | म म ग रे |
– – – – | – – – – | – – – – | – – – – |
व – स्तु अ | मो – लि क | दी – मे रे | स त गु रू |
१ २ + ४ | १ २ + ४ | १ २ + ४ | १ २ + ४ |

ऽ रे प म ऽ | ग सा ऽ रे ग | सा ऽ नीं पं |
o o – – – | – – o o – | – – – – |
– कि र पा – | क र – अ प | ना – यो पा |
१ २ + ४ | १ २ + ४ | १ २ + ४ |

धं सा सा रे रे ग सा रे ||
o o o o o o o o ||
यो – जी – मै – ने – ||
१ २ + ४ ||

राग मालकंस—तीन ताल

मोरी लागी लटक गुरु-चरननकी ॥ ध्रु० ॥

चरन बिना मुझे कछु नहीं भावे,
झूठ माया सब सपननकी, ॥ १ ॥

भवसागर सब सूख गया है,
फिकर नहीं मुझे तरननकी ॥ २ ॥

मीरां कहे प्रभु गिरिधर नागर!
उलट भई मोरे नयननकी ॥ ३ ॥

म	म	ग्	म	ग्	सा	नीं्	सा	धं्	नीं्	|	सा	सा	म	म	म
o	o	o	o	o	o	o	o	o	o	|	o	o	o	o	–
मो	री	ला	–	गी	ल	ट	क	गु	रू	|	च	र	न	न	की
		+				७				|	१				३

ग्	ग्	ग्	ग़्	म	ध्	नी्	|	सा॑	सा॑	सा॑	सा॑	ग्॑	नी्	सा॑
o	o	o	o	–	o	o	|	o	o	o	o	o	o	–
च	र	न	बि	ना	मु	झे	|	क	छु	न	हिं	भा	–	वे
+				७			|	१				३		

ध्	नी्	सा॑	ग्॑	म॑	ग्॑	सा॑	सा॑	|	ध्	म	ध्	नी्	ध्	म
o	o	o	o	o	o	o	o	|	o	o	o	o	o	o
जू	–	ठ	मा	–	या	स	ब	|	स	प	न	न	की	–
+				७				|	१				३	

राग देश या पूर्वी–तीन ताल

नहिं ऐसो जन्म बारंबार ।
क्या जानुं कछु पुन्य प्रकटे मानसा अवतार ॥ ध्रु० ॥
बढ़त पल पल, घटत छिन छिन, चलत न लागे बार ।
बिरछके ज्यों पात टूटे, लागे नहिं पुनि डार ॥ १ ॥
भवसागर अति जोर कहिये विषम ओखी धार ।
सुरतका नर बाँधे बेड़ा बेगि उतरे पार ॥ २ ॥
साधु संता ते महंता चलत करत पुकार ।
दासि मीरां लाल गिरिधर जीवना दिन चार ॥ ३ ॥

म रे म प प नो सां रें नी ध म रे ग नीं सा
० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ‿ ‿ ० ०
न हिं ऐ सो ज – – – न्म – बा – – रं –
३ + ७

रे ग म ग रे ग नीं ऽ सा सा म म ग सा सा
‿ ‿ ० ० ० ‿ ‿ ० ० ० – – – ० ०
वा – – – – – – – – र क्या जा नूं क छु
१ ३ + ७

, रे म म प प प , नो सां नी सां नी सां
० ० ० ० ० ० – ० ० ० ० – ० ०
– पु – न्य प्र ग टे – मा – न सा अ व
१ ३ + ७

नी सां रें सां नी ध प ध
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
ता – – – – – – – र
१

’ म म प नी नी नी नी | ’ नी सां नी सां सां सां सां
० ० ० ० ० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ०
– ब ढ त प ल प ल | – घ ट त छि न छि न
+ ७ | १ ३

’ प प ’ नी नी सां सां | सां नी ऽ रें सां ऽ रें नी ऽ ध प
‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ० – – | ‿ ‿ ० ‿ ‿ ० ‿ ‿ ० ० ०
– च ल – त न ला गे | वा – – – – – – – – – – र
+ ७ | १ ३

ऽ नी सां रें रें रें गं मं | गं रें नी सां नी सां सां ,
० ० ० ० – ‿ ‿ ० | ‿ ‿ ० ० ० – – ०
– बी र छ के ज्यों – – | – – पा – त टू टे –
+ ७ | १ ३ +

नी ऽ नी सां नी सां सां | नी सां रें सां नी ध प ध
० ० ० ० ० ० ० | ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
ला – गे न हिं पु नी | डा – – – – – – – र
७ | १

राग झिंझोडी–ताल दादरा

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई ।
दूसरा न कोई, साधो, सकल लोक जोई ।। ध्रु० ।।

भाई छोड़्या, बंधु छोड़्या, छोड़्या सगा सोई ।
साधु संग बैठ बैठ लोक-लाज खोई ।। १ ।।

भगत देख राजी हुई, जग़त देख रोई ।
अँसुवन जल सींच सींच प्रेम-बेलि बोई ।। २ ।।

दधि मथ घृत काढ़ि लियो, डार दई छोई ।
राणा बिषको प्यालो भेज्यो, पीय मगन होई ।। ३ ।।

अब तो बात फैल पड़ी, जाणे सब कोई ।
मीरां एम लगण लागी, होनी होय सो होई ।। ४ ।।

नीं सा नीं सा रे	धं सा। नीं धं पं धं	सा ऽ धं सा ऽ रे
मे रे तो गि रि	घ र गो पा – ल	दू – स रा – न
१ +	१ +	१ +
ग ग सा रे ग म ग म	रे म ग् रे सा धं नीं	सा सा नीं सा सा
– – ० ० ० ० – –	– – – ० ० – –	
को अी रे – – – प्र भु	मे – रे तो – गि रि	ध र गो पा ल
१ +	१ +	१ +

सा ऽ सा ग ऽ म	प प प ध प ऽ	रे रे ग म प ध
दू – स रा – न	को अी रे सा धो –	स क ल लो – क
१ +	१ +	१ +
ग प म ग रे ग	सा रे ग म ग् रे धं नीं	सा सा नीं सा ऽ सा
	० ० ० ० – – – –	
जो – अी – – –	मे – – – रे तो गि रि	ध र गो पा – ल
१ +	१ +	१ +
सा ऽ सा ग ग म	प ऽ प ध प ऽ	रे ऽ ग म प ध
भा – अी छो ड्या –	बं – धु छो ड्या –	छो – ड्या – स गा
१ +	१ +	१ +
ग प म ग रे ग	म ऽ म म ऽ म	ग म प ध प म ग म
		० ० ० ० – – – –
सो – अी – – –	सा – धु सं – ग	बै – – – ठ बै – ठ
१ +	१ +	१ +
रे म ग् रे सा सा	नीं सा रे ग म ग म	रे म ग् रे सा धं नीं
	– – ० ० – – –	– – – ० ० – –
लो – क ला – ज	खो – अी – – – –	मे – रे तो – गि रि
१ +	१ +	१ +
सा सा नीं सा ऽ सा		
ध र गो पा – ल		
१ +		

राग अडाणा–ताल तेवरा

हरि ! तुम हरो जनकी भीर ॥ टेक ॥

द्रौपदीकी लाज राखी,
तुम बढ़ायो चीर ॥ १ ॥

भक्त कारन रूप नरहरि,
धर्यो आप शरीर ॥ २ ॥

हरिनकश्यप मार लीन्हो,
धर्यो नाँहिन धीर ॥ ३ ॥

बूड़ते गजराज राख्यो,
कियो बाहर नीर ॥ ४ ॥

दासि मीरां लाल गिरधर,
दुख जहाँ तहाँ पीर ॥ ५ ॥

ध्	नी्	सां	सां	|	नी्	प	ऽ	म	प	ग्	म	प	|	सां	ऽ	सां	ध	नी्	रें	सां	‖
											०	०									
ह	रि	तु	म	|	ह	रो	–	ज	न	की	–	–	|	भी	–	र	ह	रि	तु	म	‖
४		६			१			४		६				१			४		६		

म	ऽ	प	ध्	ऽ	ध्	ऽ	|	नी्	सां	सां	नी्	सां	सां	ऽ
द्रौ	–	प	दी	–	की	–	|	ला	–	ज	रा	–	खी	–
१			४		६			१			६		४	

नी्	सां	रें	रें	सां	रें	|	ग्	ऽ	ग्	ध्	नी्	सां	सां
तु	म	ब	ढा	यो	–	|	ची	–	र	ह	रि	तु	म
१			४	६			१			४		६	

नी्	प	ऽ	म	प	ग्	म	प	|	सां	ऽ	सां	‖
						०	०					
ह	रो	–	ज	न	की	–	–	|	भी	–	र	‖
१			४		६				१			

राग मांड–ताल धुमाळी अथवा तेवरा

म्हाँनें चाकर राखो जी !
गिरिधारी लला ! चाकर राखो जी ॥ टेक ॥

चाकर-रहसूँ, बाग लगासुं, नित उठ दरसन पासुं ।
वृन्दावनकी कुंज गलिममें, गोविन्द-लीला गासूँ ॥ १ ॥

चाकरीमें दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊँ खरची ।
भाव-भगति जागीरी पाऊँ, तीनों बाताँ सरसी ॥ २ ॥

मोर मुकट, पिताम्बर सोहे, गल बैजंती माला ।
वृन्दावनमें धेनु चरावे, मोहन मुरलीवाला ॥ ३ ॥

ऊँचे ऊँचे महल बनाऊँ, बिच बिच राखूं बारी ।
साँवरियाके दरसन पाऊँ पहिर कुसुम्बी सारी ॥ ४ ॥

जोगी आया करनकूं, तप करने संन्यासी ।
हरी-भजनकूं साधू आये, वृन्दावनके वासी ॥ ५ ॥

मीरांके प्रभु गहिर गंभीरा, हृदे रहो जी धीरा ।
आधी रात प्रभु दरसन दीन्हों, जमुनाजीके तीरा ॥ ६ ॥

सा। रे	ग ग म ग रे रे ग	सा ऽ सा̍ सा̍	सा̍ सा̍ सा̍ सा̍ नी ध प म
o o	– o o o o o o	~ – o o	– o o o o ⌣ ⌣ o
म्हा ने	या क र रा – खो–	जी – गि रि	धा रि ल ला – – – –
४	१ २ + ४	१२+ ४	१ २ + ४

प ध प म ग रे सा रे ग	सा ऽ सा सा	रे म म प म प ध ऽ
o o o o o ⌣ ⌣ o o	~ – o o	o o o o ⌣ ⌣ o –
चा – क र रा – – खो –	जी – गि रि	धा – रि ल ला – – –
१ २ + ४	१२+ ४	१ २ + ४

प ध सा̍ नी ध प म म ऽ म म	प ध प म ग रे सा रे ग
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ – o o	o o o o o ⌣ ⌣ o o
– – – – – – – – – मा ने	चा – क र रा – – खो –
१ २ + ४	१ २ + ४

म म म म म म	प प प प ध नी सा̍ नी	प प प प ध नी सा̍ रे̍
– o o o o –	– o o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣	o o o o o o o o
चा क र र ह सुं	बा ग ल गा – – – सूं	नि त उ ठ द र स न
१ २ + ४	१ २ + ४	१ २ + ४

सा̍ सा̍ ऽ	सा̍ सा̍ सा̍ सा̍ सा̍ रे̍	नो नी सा̍ ध ध प
– ~ –	– – o o o o	– o o o o –
पा सूं –	वृ न्दा व न की –	कुं ज ग लि न मैं
१ + ४	१ २ + ४	१ २ + ४

ध रे̍ सा̍ नी ध ध प	ध प म ऽ ग म	प ध प म
o o o o – o o	o o – – o o	o o o o
गो – वि न्द ली ला –	गा – सुं – म्हा ने	चा – क र
१ २ + ४	१ २+ ४	१ २

राग तोडी–ताल तेवरा

मन रे! परस हरिके चरन ।
सुभग सीतल कलम–कोमल, त्रिविध–ज्वाला–हरन ॥
जे चरन प्रह्लाद परसे, इन्द्र पदवी धरन ॥
जिन चरन ध्रुव अटल कीन्हो, राखि अपनें सरन ॥
जिन चरन ब्रह्मांड भेटयो, नखसिखौ श्रीभरन ॥
जिन चरन प्रभु परसि लीन्हें, तरी गौतम धरन ॥
जिन चरन कालीहि नाथ्यो, गोपलीला करन ॥
जिन चरन धार्यो गोवर्द्धन, गरब मधवा हरन ॥
दास मीरां लाल रिरिधर, अगम तारन तरन ॥

ग् मा ध् ऽ	मा ग् रे् सा नीं सा रे्	ग् ग् ग् ग् रे् ग् रे् सा ऽ
– – – –	– – – – – – –	– – – ० ० ० ० – –
म न रे –	प र स ह रि के –	च र न म – – न रे –
४ ६	१ ४ ६	१ ४ ६

ध् ध् ध् सा सा रे्	ग् रे् ग् रे् सा सा	प प प मा प ध्
– – – ‿ – –	– – – ‿ – –	– – – ‿ – –
सु भ ग शी त ल	क म ल को म ल	त्रि वि ध ज्वा ला –
१ ४ ६	१ ४ ६	१ ४ ६

ध् मा ग् रे् ग् मा ध्	मा ग् रे् सा नों सा रे्	ग् ग् ग्
– – – – – – –	– – – – – – –	– – –
ह र न म न रे –	प र स ह रि के –	च र न
१ ४ ६	१ ४ ६	१

ग् ग् मा मा ध् ध्	सा सा सा रे् सा	ध् ऽ ध् सा सा रे् ऽ
‿ – – – – –	‿ – – – ‿	– – – – – – –
जे च र न प्र ह	ला द प र से	ओं – द्र प द वी –
१ ४ ६	१ ४ ६	१ ४ ६

नी ध् ध् ग् मा ध्
– – – – – ‿
ध र न म न रे
१ ४ ६

राग बागेश्री–तीन ताल

अजहुँ न निकसै प्राण कठोर ! ॥ टेक ॥

दरसन बिना बहुत दिन बीते,
सुंदर प्रीतम मोर ॥ १ ॥

चारि पहर चारौं जुग बीते,
रैनि गँवाई भोर ॥ २ ॥

अवधि गई अजहूँ नहि आये,
कतहुँ रहे चितचोर ! ॥ ३ ॥

कबहूँ नैन निरखि नहिं देखे,
मारग चितवत चोर ॥ ४ ॥

दादू ऐसे आतुर बिरहिणी,
जैसे चंद चकोर ॥ ५ ॥

म	म	प	ध	म	ग॒	रे	सा	|	ध	ध	प	ध	नी॒	ऽ	नी॒
०	०	०	०	०	०	०	०	|	–	०	‿	‿	–	०	०
अ	ज	हुँ	न	नि	क	से	–	|	प्रा	ण	क	–	ठो	–	र
+				७				|	१				३		

म	म	प	ध	म	ग॒	रे	सा	|	ध	ध	प	ध	सां	ऽ	सां
०	०	०	०	०	०	०	०	|	–	०	‿	‿	–	०	०
अ	ज	हुँ	न	नि	क	से	–	|	प्रा	ण	क	–	ठो	र	र
+				७				|	१				३		

ग॒	म	ध	नी॒	सां	सां	सां	|	नी॒	सां	रें	सां	नी॒	सां	नी॒	ध
०	०	०	०	०	–	०	|	०	०	०	०	०	०	०	०
द	र	श	न	बी	ना	ब	|	हु	त	दी	न	बी	–	ते	–
+				७			|	१				३			

ध	ध	ध	ध	नी॒	प	ध	|	सां	नी॒	ध	म	म
–	०	०	०	०	०	०	|	–	–	–	०	०
सुं	द	र	प्री	–	त	म	|	मो	–	–	–	र
+			७				|	१		३		

राग बिहाग–तीन ताल

नाम जपन क्यों छोड़ दिया ?
क्रोध न छोड़ा, झूठ न छोड़ा,
सत्यवचन क्यों छोड़ दिया ? ॥ ध्रु० ॥

झूठे जगमें दिल ललचा कर
असल वतन क्यों छोड़ दिया ?
कौड़ीको तो खूब सम्हाला
लाल रतन क्यों छोड़ दिया? ॥ १ ॥

जिहि सुमिरनते अति सुख पावे
सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ?
खालस इक भगवान भरोसे
तन, मन, धन क्यों न छोड़ दिया? ॥ २ ॥

ग ग ग ग म प | ग म ग रे सा नीं पं नीं नीं सा सा |
– ० ० ० ० – | ० ० ० ० – – – ० ० – –
ना म ज प न क्यो | छो – ड दि या – क्रो ध न छो ड़ा
\+ ७ | १ ३ + ७

प ग म ग सा सा ग म प प नी सा | प नी सा रे सा नी मा प मा प ध ||
– ० ० – – – ० ० ० ० ० ० | ‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ‿ ‿ ०
जू ठ न छो ड़ा स त्य व च न क्यों – | छो – – – ड दि या – – – –
१ ३ + ७ | १ ३

ग म प नी सा सा सा | नी ध नी सा नी प प नी नी नी नी सा सा सा |
० ० ० ० ० ० – | ० ० ० ० – ० ० ० ० ० ० ० ० –
जू – ठे – ज ग में | दि ल ल ल चा क र अ स ल व त न क्यों
\+ ७ | १ ३ + ७

प नी सा रे सा नी मा प मा प ध ग म प नी सा ग सा |
‿ ‿ ‿ ‿ ० ० ० ० ‿ ‿ ० ० ० ० ० ० ० –
छो – – – ड़ दि या – – – – कौ – डी – को – तो
१ ३ + ७

नी ध नी सा रे सा नी प ग म ग म प प नी सा |
० ० ‿ ‿ ‿ ० – – ० ० ० ० ० ० ० ०
खू – ब – – स म्हा ला ला – ल र त न क्यों –
१ ३ + ७

सा ग ग म ग रे सा नी ध प म ग ||
० ० ० ० ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿
छो – ड दि या – – – – – – –
१ ३

राग भैरवी—तीन ताल

नरहरि! चंचल है मति मेरी, कैसे भगति करूँ मैं तेरी? ॥
तू मोहिं देखै, हौं तोहि देखूं. प्रीति परस्पर होई।
तू मोहिं देखै, तोहिं न देखूँ, यह मति सब बुधि खोई ॥

सब घट अंतर रमसि निरंतर, मैं देखन नहिं जाना।
गुन सब तोर, मोर सब औगुन, कृत उपकार न माना ॥
मैं तैं तोरि मोरि असमझि सों कैसे करि निस्तारा?
कह रैदास कृष्ण करुणामय जै जै जगत-अधारा! ॥

सा प प म प ध् प म रे ग् ऽ रे् सा सा रे् ग् म | रे् सा ध् प
o o o ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o o o o o | – – – –
न र ह रि – – – – च – – च ल है – म ति | मे री कै से
३ + ७ | १ ३

ग् प प प ध् नी् सां | प नी् ध् प म रे ग् म प ध् प म रे ग् रे् सा
- o o o o o o | o o ‿ o ‿ o o o ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o o
भ क्ति क हूँ – मैं – | तो – री – – न र ह रि – – – चं – च ल
+ ७ | १ ३ +

सा रे् ग् म रे् सा ऽ ||
o o o o – – ~
है – म ति मे री – ||
७

ग् म ध् नी् सां रें् सां | नी् सां सां रें सां ध् प प प प प ध् नी् सां |
o o o o o o – | – o o o o o o – o o o o o o |
तू – मो हिं दे – खे | हौ तो हि दे – खूं – प्री ति प र – स्प र |
+ ७ | १ ३ + ७ |

प नी् ध् प म रे ग् म प ध् प म रे ग् रे् सा सा रे् ग् म | रे् सा ||
o o ‿ o ‿ o o o ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ ‿ o o o o o o | ~ ~ ||
हो – औ – – न र ह रि – – – चं – च ल है – म ति | मे री ||
१ ३ + ७ | १ ३ ||

राग देश–ताल तेवरा–रुपक

कोई वन्दो, कोई निन्दो, कोई कैसे कहो रे ।
रघुनाथ साथे प्रीत बाँधी, होय तैसे होय रे ॥ ध्रु० ॥
कमल म्याने मोट बाँधी, नीर था भरपुर रे ।
रामचन्द्रने कूर्म होकर राख लीनी पीठ रे ॥ १ ॥
चंद्र सूर्य जिमि ज्योत, स्तंभ बिनु आकाश रे ।
जल ऊपर पाषाण तारे, क्यों न तारे दास रे? ॥ २ ॥
जपत शिव, सनकादि मुनिजन नारदादि संत रे ।
जन्म जन्मके स्वामी रघुपति दास जनि जसवंत रे ॥ ३ ॥

रे ग रे नीं सा सा	रे म म प प ध	नी सा रे नी॒ ध म
– – – – – ~	– – – ~ – –	– – – – – ~
को – अी वं – दो	को – अी नि दो –	को – अी कै ·– से
+ ४ ६	+ ४ ६	+ ४ ६

प प ध नी॒ ध प प ध	नी नी सा सा रे	ध सा नी॒ ध प
– o o – – – – –	~ – ~ – –	– – – ~ ~
क हो – – रे – र घु	ना थ सा थे –	प्री – त बां धी
+ ४ ६	+ ४ ६	+ ४ ६

रे म रे म प नी॒ ध	म ग रे ग नीं सा
– – – – – – –	~ – ~ o o –
हो – य तै – से –	हो य रे – – –
+ ४ ६	+ ४ ६

म म प नी नी	नी सा नी सा सा	नी सा नी सा नी सा
– – – ~ ~	– – – ~ –	– – – ~ – –
क म ल म्या ने	मो – ट बां धी	नी – र था भ र
+ ४ ६	+ ४ ६	+ ४ ६

नी सा रे सा रे सा नी ऽ	नी सा नी सा सा रे	ध सा नी॒ ध प प
o o – – ~ o o –	– – – ~ – –	– – – ~ – –
पू – – र रे – – –	रा – म चं द्र ने	कू – र्म हो क र
+ ४ ६	+ ४ ६	+ ४ ६.

रे म रे म प नी॒ ध	म ग रे ग नीं सा
– – – – – – –	~ – ~ o o –
रा – ख ली – नी –	पी ठ रे – – –
+ ४ ६	+ ४ ६

राग भैरवी–तीन ताल

हो रसिया, मैं तो शरण तिहारी,
नहिं साधन बल वचन चातुरी,
एक भरोसो चरणे गिरिधारी ।। ध्रु० ।।

कड़ुइ तुँबरिया मैं तो नीच भूमिकी
गुण-सागर पिया तुम हि सँवारी ।। १ ।।

मैं अति दीन बालक तुम सरन
नाथ न दीजे अनाथ बिसारी ! ।। २ ।।

निज-जन जानि सँभालोगे प्रीतम
प्रेमसखी नित जाऊँ बलिहारी ।। ३ ।।

प प प म प ध् प म रे ग् रे् सा सा रे ग् म |
– o o ◡ ◡ o o o o o o o o o o o
हो र सि या – – – – मैं – तो – स र न ति
१ ३ + ७

रे् सा ऽ सा सा रे् सा ध् ध् नीं नीं | सा ग् रे ग् ऽ रे ग्
– – ~ o o o o o o o o | o o o o o o –
हा री – न हिं सा – ध न ब ल | व च न चा – तु री
१ ३ + ७ | १ ३

प प प प ध् ध् प म प | ऽ ग् ग् प प ध् ध् नी सां प नी ध प म |
– o o o o ◡ ◡ ◡ ◡ | – o o – o o – o o o o ◡ o ◡
अे क भ रो – सो – – – | –च र ने गि रि धा – – री – – – –
+ ७ | १ ३ + ७

ग् म ध् नी सां रें सां नीं नीं सां सां निं सां |
o o o o o o – – – – o ◡
क ड़ु ओी तु ब रि या मैं तो नी च भु –
१ ३ + ७

रें सां ध् प ऽ प प प ध् नी ध् प | ऽ ग् ग् प प ध् नी सां ध प ||
o o o o ~ o o – o o o o | ~ o o o o – o o – –
– मि की – – गु न सा ग र पि या | – तु म हि सँ वा – – री –
१ ३ + ७ | १ ३ + ७

राग बिहाग–तीन ताल

चेतन ! अब मोहिं दर्शन दीजे ।
तुम दर्शन शिव सुख पामीजे,
तुम दर्शन भव छीजे ।। ध्रु० ।।

तुम कारन तप संयम किरिया, कहो कहाँ लौं कीजे ?
तुम दर्शन बिनु सब या जूठी, अंतर चित्त न भीजे ।। १ ।।

क्रिया मूढ़मति कहे जन कोई, ज्ञान औरको प्यारो,
मिलत भाव रस दोउ न भाखे, तू दोनोंते न्यारो ।। २ ।।

सबमें है और सबमें नाहीं, पूरन रूप अकेलो,
आप स्वभावे वे किम रमतो ? तू गुरु अरु तू चेलो ।। ३ ।।

अकल अलख प्रभु ! तू सब रूपी, तू अपनी गति जाने,
अगम रूप आगम अनुसारे, सेवक सुजस बखाने ।। ४ ।।

सा रे ग रे सा नीं सा सा ग ग ग म प म | ग सा सा रे ग रे सा नीं
⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o o o o o o o o o | – – ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o
चे – – – त न अ ब मो हिं द र स न | दी जे चे – – – त न
३ + ७ | १ ३

नीं पं नीं नीं सा सा सा सा | प प ग म ग सा नीं नीं सा ग म प प नी नी |
o o o o o o o o | o o o o – o o o o o o o o o o |
तु म द र स न शि व | सु ख पा – मी जे – तु म द र स न भ व |
+ ७ | १ ३ + ७ |

ध नी सां नी मा प म ग ||
⌣ ⌣ o – o o o o ||
छी – – जे चे – त न ||
१ ३ ||

ग म ग म प प नी नी | सां सां सां सां रें सां नी नी सां नी ध प मा |
o o o o o o o o | – o o o o – – o o o o o |
तु म का – र न त प | सं य म कि रि या क हौं क हां – लौं – |
+ ७ | १ ३ + ७ |

प नी ध सां नी प ग म ग म प प नी नो | नो नो सां सां नी प म ग
o o o o – – o o o o o o o o | o o – o o o ⌣ ⌣
की – – – जे – तु म द र स न बि नु | स ब या जू – ठी – –
१ ३ + ७ | १ ३

सा ग म प नी सां | प प नी सां गं रें सां नी ध प म ग रे सा नीं सा
– o o – o o | ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣
अ न्त र ची त्त न | भी – – – – – जे – – – – – – – – –
+ ७ | १ ३

सा सा ग ग ग म प म | ग सा नीं रे ग म ग रे सा नीं ||
o o o o o o o o | – o o ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ ⌣ o o ||
अ ब मो हिं द र स न | दी जे – चे – – – – त न ||
+ ७ | १ ३ ||

राग केदार–तीन ताल

राम कहो, रहमान कहो कोऊ, कान्ह कहो, महादेव री
पारसनाथ कहो, कोऊ ब्रह्मा सकल ब्रह्म स्वयमेवरी ।।ध्रु०।।

भाजन-भेद कहावत नाना, एक मृत्तिका रूप री
तैसे खंड कल्पनारोपित, आप अखंड सरूप री ।। १ ।।

निजपद रमे राम सो कहिये, रहिम करे रहिमान री
कर्षे करम कान्ह सो कहिये, महादेव निर्वाण री ।। २ ।।

परसे रूप पारस सो कहिये, ब्रह्म चिन्हे सो ब्रह्म री
इह विधि साधो आप आनन्दघन, चेतनमय निकर्म री ।। ३ ।।

सा	सा	सा	म	म	म	प	प	प	मा	प	प	मा	प	प	ध	प	प
–	०	०	–	०	०	–	०	०	–	०	०	–	०	०	–	०	०
रा	म	क	हो	र	ह	मा	न	क	हो	को	अु	का	न	क	हो	म	हा
+			७			१			३			+			७		

प	मा	ध	प	म	ऽ	मा	प	प	ध	न्ी	ध	प	प	ध	प	म	म
०	०	०	०	–	–	–	०	०	०	०	०	०	–	०	०	–	–
दे	–	–	व	री	–	पा	र	स	ना	–	थ	क	हो	को	अु	ब्र	ह्मा
१			३			+			७				१			३	

सा	ध	ध	प	ऽ	प	म	ग	म	ग	म	रे	सा	ऽ
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	–	–
स	क	ल	ब्र	–	ह्म	स्व	य	मे	–	–	व	री	–
+				७				१				३	

प	सा̍	सा̍	सा̍	सा̍	सा̍	सा̍	सा̍	सा̍	सा̍	रे̍	सा̍
–	०	०	–	०	०	–	०	०	०	०	–
भा	ज	न	भे	द	क	हा	व	त	ना	–	ना
+			७			१			३		

सा̍	नी	ध	ऽ	ध	प	प	मा	ध	प	म	ऽ	मा	प	ध	न्ी	ध	प
–	०	०	०	०	–	०	०	०	०	–	–	–	–	०	०	०	०
अे	क	मृ	–	ति	का	रू	–	–	प	री	–	तैं	से	खं	–	ड	क
+			७			१				३		+		७			

ऽ	प	म	ऽ	ग	रे	सा	सा	सा	म	म	प	प	प	प	प	ध	नी	सा̍	ध	प	म	ऽ
०	०	०	‿	‿	–	०	०	–	०	०	–	०	०	‿	‿	‿	‿	०	‿	‿	–	–
–	ल्प	ना	–	–	रो	पि	त	आ	प	अ	खं	ड	स्व	रू	–	–	–	–	प	–	री	–
१					३			+			७			१							३	

राग भैरवी–तीन ताल

संत परम हितकारी, जगत माँहो ॥ ध्रु० ॥

प्रभुपद प्रगट करावत प्रीति, भरम मिटावत भारी ॥ १ ॥

परम कृपालु सकल जीवन पर, हरि सम सब दुखहारी ॥ २ ॥

त्रिगुणातीत फिरत तन त्यागी, रीत जगतसे न्यारी ॥ ३ ॥

ब्रह्मानन्द संतनकी सोबत, मिलत है प्रगट मुरारी ॥ ४ ॥

नीं सा सा सा रे॒ ग॒ म | रे॒ सा प म ध॒ प म ग॒ रे॒ ग॒ रे॒ सा सा रे ग॒ म
– ० ० ० ० ० ० | – ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
सं त प र म हि त | का री ज ग त मा हि सं – – त प र म हि त
\+ ७ | १ २ + ७

रे॒ सा ऽ सा सा ग॒ ग॒ म म म म | ग॒ प म रे॒ सा प प प प
– ~ – – ० ० ० ० ० ० ० | – ० ० – ० ० ० ० ०
का री – प्र भु प द प्र ग ट क | रा व त प्री ति भ र म मि
१ २ + ७ | १ २ +

प ध॒ नी॒ सां | प ध॒ प म ग॒ ध॒ प म ग॒ रे॒ ग॒ रे॒ सा सा रे ग॒ म
० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
टा – व त | भा – री ज ग त मां हिं सं – – त प र म हि त
७ | १ २ + ७

रे॒ सा ऽ ||
– ~ –
का री –
१ २

ग॒ म ध॒ नी॒ सां सां सां | नी॒ नी॒ सां रे॒ सा ध॒ प प प प प
० ० ० ० – ० ० | ० ० – ० ० ० ० ० ० ० ०
प र म कृ पा लु स | क ल जी व न प र ह रि स म
\+ ७ | १ २ +

प ध॒ नी॒ सां | प नी॒ ध॒ प म म ध॒ प म ग॒ रे॒ ग॒ रे॒ सा सा रे
० ० ० ० | ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ०
स ब दु ख | हा – रि – ज ग त मां हि सं – – त प र म
७ | १ २ + ७

ग॒ म रे॒ सा ऽ ||
० ० – ~ –
हि त का री –
१ २

राग तिलंग—तीन ताल

मैं तो बिरद भरोसे बहुनामी ।
सेवा सुमिरन कछुवे न जानूं,
सुनियो परमगुरु स्वामी ॥ ध्रु० ॥

गज अरु गोध तारि है गणिका,
कुटिल अजामिल कामी ॥ १ ॥

यही साख श्रवणे सुनि आयो,
चरण-शरण सुखधामी ॥ २ ॥

प्रेमानन्द तारो के मारो,
समरथ अन्तरयामी ॥ ३ ॥

ग म प नी म प नी सा नी प म ग | म प ग म ग सा ||
○ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ○ ○ ○ ○ – – | ○ ○ ○ ○ – – ||
मैं – तो – – – बि र द भ रो से | ब हु ना – मी – ||
३ + ७ | १ ३ ||

ग म प नी म प नो नो नी नी | सा सा सा सा नो सा सा |
○ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ○ ○ ○ ○ | ○ ○ ○ ○ ○ ○ – |
से – वा – – – सु मि र न | क छु वे न जा – नूं |
+ ७ | १ ३ |

नो नी नो नी सा सा रे सा | नी प ग म प नी म प ||
○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ ○ | – – ○ ○ ◡ ◡ ◡ ◡ ||
सु नि यो प र म गु रू | स्वा मी मैं – तो – – – ||
+ ७ | १ ३ ||

राग आशावरी–तीन ताल

कर ले सिँगार, चतुर अलबेली,
साजन के घर जाना होगा ।। ध्रु० ।।
मिट्टी ओढावन, मिट्टी बिछावन,
मिट्टी से मिल जाना होगा ।। कर० ।। १ ।।
नहा ले, धो ले, सीस गुँथा ले,
फिर वहां से नहि आना होगा ।। कर० ।। २ ।।

, रे म प सां | ध् प प ध् म प ध् म प ग् रे सा रे म प नी |
– क र ले सि | गा र च तु र अ – ल – बे ली – क र ले सिं |
७ | १ ३ + ७

ध् प ध् म प म प ध् म प ग् रे सा सा सां सां | सां रें ग् रें सां
गा – र् च तु र अ – ल – बे ली – सा ज न | के – – ध र
१ ३ + ७ | १

नी सां नी सां रें सां ध् प ||
जा – ना – – – हो गा ||
३ +

म म म प ध् ध् | नी सां ऽ सां सां नी सां सां सां
मि ट्टी ओ ढा व न | मि – – ट्टी बि छा – व न
+ ७ | १ ३

नि सां ग् ग् सां रें ऽ सां सां | नि सां नि सां रें नि सां ऽ ध् प
मि – – ट्टी से – – मि ल | जा – ना – – – – – – हो गा
+ ७ | १ ३

ध म ऽ म म प ध नि सां सां ||
– – – क र ले – – – सिं ||
+ ७

राग खमाज–ताल धुमाळी–तीनताल

भूतळ भक्ति पदारथ मोटुं, ब्रह्म-लोकमां नाहि रे;
पुण्य करी अमरापुरी पाम्या, अन्ते चोराशी मांही रे. ध्रु०
हरिना जन तो मुक्ति न मागे, मागे जनमो-जनम अवतार रे;
नित सेवा, नित कीर्तन ओच्छव, नीरखवा नन्दकुमार रे. १
भरतखंड भूतळमां जनमी, जेणे गोविन्दना गुण गाया रे,
धन धन रे एनां मातपिताने, सफल करी एणे काया रे. २
धन वृन्दावन, धन ए लीला, धन ए व्रजनां वासी रे;
अष्ट महासिद्धि आंगणिये रे ऊभी, मुक्ति छे एमनी दासी रे. ३
ए रसनो स्वाद शंकर जाणे, के जाणे शुकजोगी रे;
कंईएक जाणे व्रजनी रे गोपी, भणे नरसैंयो भोगी रे. ४

ग ग ग ग प म ग रे ग | म प प प ध म ग ग म प प ध प ध नी सां
- o o o o | - o o o o o o o o o o - o
भू त ळ भ - - - क्तिप | दा र थ मो - टुं - ब्र - ह्मलो क मां - - -
+ ७ | १ ३ + ७

नी ध ग म ग ऽ प नी नी नी नी नी | सां सां सां ध सां नी ध प
o o o o - - - o o - o o | - o o
ना - हि - रे - पु ण्य क री अ म | रा पु री पा - - - म्या
१ ३ + ७ | १ ३

ग म प प प प ध प ध नी सां | नी ध ग म म ग रे ग ऽ
o o o o o o | o o o o -
अं - ते चो रा - शीं - - - | मां - ही - रे - - - -
+ ७ | १ ३

ग म प प प नी | नी सां नी सां सां ध नी प प प नी
o o - o o - | - o o - - o o - o o -
ह रि ना ज न तो | मु क्ति न मा गे ह रि ना ज न तो
+ ७ | १ ३ + ७

ध सां नी सां सां नी नी नी नी सां सां नी सां | नी सां रे सां नी ध प
- o o o o o o - o - o o o | o o o o o o -
मु क्ति न मा गे मा गे ज न्मो ज न्म अ व | ता - - र रे - -
१ ३ + ७ | १ ३

ग म ध ध नी सां नी ध प ध | नी सां रें ध सां नी ध प
o o - o | - o o o o o
नि त से वा - - - नि - त | की र्त न ओ - च्छ - व
+ ७ | १ ३

ग म प प प ध नी सां नी ध प | ग म प ध प म म ग रे ग ऽ
o o o o o | o o o -
नी र ख वा नं - - - द कु - | मा - - - - र रे - - - -
+ ७ | १ ३

राग कालिंगडा–दीपचंदी (द्रुत)

नहि रे विसारूं, हरि अंतरमांथी नहि रे० ध्रु०

जल जमुनानां पाणी रे जातां
शिर पर मटकी धरी १

आवतां ने जातां मारग वच्चे
अमुलख वस्तु जडी. २

आवतां ने जातां वृन्दा रे वनमां
चरण तमारे पडी. ३

पीळां पीताम्बर जरकशी जामा
केसर आड करी. ४

मोर मुगट ने काने रे कुंडल
मुख पर मोरली धरी. ५

बाई मीरां कहे प्रभु गिरिधरना गुण
विठ्ठलवरने वरी. ६

सा सा रे् ऽ नीं सा	सा रे् ऽ ग म प ध् प
~ ~ ~ – ~ ~	– – – – – ० ० –
अ न्त र – मां थी	न हीं – रे – – – वि
+ ११	१ ४

म प ग म ऽ रे् सा रे् नीं	सा ऽ ऽ रे् सा रे् नीं सा
० ० ० ० – – – – –	~ – ~ ~ – ~ ~ ~
सा – – – – रू – – ह	री – – अ न्त र मां थी
+ ११	१ ४ + ११

म म म म ग म प ध् ऽ प ऽ	ध् ध् ध् सां ध् ऽ प ऽ
– ~ ~ ~ ० ० ० ० – ~ ~	~ – ~ ~ ~ ~ ~ ~
ज ल ज मु ना – – – – ना –	पा – णी रे जा – तां –
१ ४ + ११	१ ४ + ११

म म म म म ध् प म	ग ऽ ऽ म ग रे् सा रे् नीं सा
– ~ ~ – – ~ ~ ~	~ – ~ – – – – – ~ ~
शि र प र म ट्टु की ध	री – – अ – न्त र – मां थी
१ ४ + ११	१ ४ + ११

राग काफी—ताल दुत दीपचंदी

मुखडानी माया लागी रे,
मोहन प्यारा! ध्रु०

मुखडुं में जोयुं तारुं, सर्व जग थयुं खारुं,
मन मारुं रह्युं न्यारुं रे, मोहन०

संसारीनुं सुख एवुं, झांझवानां नीर जेवुं,
तेने तुच्छ करी फरीए रे, मोहन०

मीरांबाई बलिहारी, आशा मने एक तारी,
हवे हुं तो बडभागी रे, मोहन०

सा	सा	ऽ	रे	ऽ	रे	ऽ	ग॒	ग॒	ऽ	म	ऽ	म	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
मु	ख	–	डा	–	नी	–	मा	या	–	ला	–	गी	–
१			४				+			११			

प	ऽ	ऽ	ध	ऽ	प	म	ऽ	ग॒	ऽ	रे	ऽ
~	–	~	–	–	–	–	–	–	–	–	–
रे	–	–	मो	–	ह	न	–	प्या	–	रा	–
१		४			+			११			

म	म	ऽ	प	ऽ	ध	ऽ	नी	नी	ऽ	सां	ऽ	सां	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
मु	ख	–	डुं	–	में	–	जो	युं	–	ता	–	रूं	–
१			४				+			११			

प	नी	ऽ	सां	ऽ	रें	ऽ	सां	नी॒	ऽ	ध	ऽ	प	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
स	र्व	–	ज	–	ग	–	थ	युं	–	खा	–	रूं	–
१			४				+			११			

प	नी	ऽ	सां	ऽ	रें	ऽ	नी॒	नी॒	ऽ	ध	ऽ	म	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
म	न	–	मा	–	रूं	–	र	ह्युं	–	न्या	–	रूं	–
१			४				+			११			

प	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ध	ऽ	प	म	ऽ	ग॒	ऽ	रे	ऽ
–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
रे	–	–	–	–	मो	–	ह	न	–	प्या	–	रा	–
१			४				+			११			

राग छाया खमाज–तीन ताल

सद्गुरु शरण विना अज्ञानतिमिर टळशे नहि रे.
जन्म मरण देनारुं बीज खरुं बळशे नहि रे. ध्रु०

प्रेमामृत-वच-पान विना, साचा खोटाना भान विना,
गांठ हृदयनी, ज्ञान विना गळशे नहि रे. १

शांस्त्र पुराण सदा संभारे, तन मन इंद्रिय तत्पर वारे,
वगर विचारे वळमां सुख रळशे नहि रे. २

तत्त्व नथी मारा तारामां, सूज्ञ समज नरता सारामां,
सेवक सुत दारामां दिन वळशे नहिरे. ३

केशव हरिनी करतां सेवा परमानन्द बतावे नेवा,
शोध विना सज्जन एवा मळशे नहि रे. ४

सा सा सा सा रे रे म म प नी | प नी सां रें सां नी़ ध प प ध
o o o o o o o o – – | ‿ ‿ ‿ ‿ o o o o o o
स द् गु रू श र ण वि ना अ | ज्ञा – – – न ति मि र ट क
३ + ९ | १ ३

म ऽ प नी़ ध प ध | म ऽ ग रे ग रे ग सा सा रे रे म प नी सां |
– o o o o o o | o ‿ ‿ ‿ o ‿ – o o o o – – o o
शे – न हिं – – – | रे – – – – – – ज न्म म र ण दे ना रूं – |
+ ७ | १ ३ + ७ |

प नी सां रें सां नी़ ध प प ध म ऽ प नी़ प ध ऽ | म रे ग रे ||
‿ ‿ ‿ ‿ o o o o o o – o o – ‿ ‿ o | – ‿ o ‿
बी – – – ज ख रूं – ब ळ शे – न हिं – – – | रे – – – ||
१ ३ + ७ | १ ||

म म प प नी नी | सां सां नी सां सां नी नी सां नी सां |
– – o o o o | – o o – – – – – o o
प्रे मा मृ त व च | पा न वि ना सा चा खो टा ना – |
+ ७ | १ ३ + ७ |

रें गं़ रें सां नी़ ध प प रें रें रें रें सां रें गं़ रें | नी सां नी सां
o o o o o o – – o o o o ‿ ‿ ‿ ‿ | – o o –
भा – न वि ना – – गां ठ हृ द य नी – – – | ज्ञा न वि ना
१ ३ + ७ | १ ३

नी़ ध प म प प नी़ ऽ ध प ध प | म ऽ ग रे ग ऽ रे रे ग सा सा |||
o ‿ ‿ o – o o ‿ ‿ ‿ o ‿ | o ‿ ‿ ‿ ‿ o ‿ o o o o
ग ळ – शे – न हिं – – – – – | रे – – – – – – स द् गु रू |||
+ ९ | १ ३ |||

राग बागेश्री–ताल धमार अगर तेवरा

दीनानाथ दयाळ नटवर! हाथ मारो मूकशो मा;
हाथ मारो मूकशो मा, हाथ मारो मूकशो मा. ध्रु०
आ महा भवसागरे, भगवान हुं भूलो पडचो छुं;
चौद-लोक-निवास चपला-कान्त! आ तक चूकशो मा. १
ओथ ईश्वर आपनी, साधन विषे समजुं नहीं हुं;
प्राणपालक! पोत जोई, शंख आखर फूंकशो मा. २
मात तात सगां सहोदर, जे कहुं ते आप मारे,
हे कृपामृतना सरोवर! दास सारुं सूकशो मा. ३
शरण केशवलालनुं छे, चरण हे हरि राम तारुं;
अखिलनायक! आ समय, खोटे मशे पण खूटशो मा. ४

सा सा नृी ध प ध नृी ध म ग् रे सा | नृीं सा सा नृी ध |
~ – ~ – o o ~ – – – – – | – – – ~ ~
दी ना ना थ थ – या ल न ट व र | हा – थ मा रो |
+ ४ ६ + ४ ६ | + ४ ६ |

ध नृी सा रे ग् रे सा नृी ध पृ धृ ||
~ – o o o o o o o ◡ ◡
मू क शो – – – मा – – – – ||
+ ४ ६

म म ध नृी ध नृी | सा सा सा नृी सा रे ग् रे सा सा |
~ – – – – – | ~ – ~ – – – – – ~ ~
आ म हा – भ व | सा ग रे भ ग वा – न हुं भू |
+ ४ ६ | + ४ ६ + ४ ६ |

नृी सा रे सा नृी ध | सा म ग् रे ग् रे सा | नृी नृी ध ग् ग् रे सा |
o o – – ~ ~ | – – – – – – – | – – – – – – –
लो – – पडचो छुं | चौ – द लो – क नि | वा – स च प ला – |
+ ४ ६ | + ४ ६ | + ४ ६ |

नृीं सा सा नृी ध ध | ध नृी सा रे ग् रे सा नृी ध पृ धृ ||
– – – ~ – – | ~ – o o o o o o o ◡ ◡
का – न्त आ त क | चू क शो – – – मा – – – – ||
+ ४ ६ | + ४ ६

प्रभातियुं

हरिने भजतां हजो कोईनी लाज जती नथी जाणी रे,

जेनी सुरता शामळिया साथ, वदे वेद-वाणी रे. टेक

वहाले उगार्यो प्रह्लाद, हरणाकंस मार्यो रे;

विभीषणने आप्युं राज्य, रावण संहार्यो रे. १

वहाले नरसिंह महेताने हार हाथोहाथ आप्यो रे;

ध्रुवने आप्युं अविचळ राज, पोताने करी थाप्यो रे. २

वहाले मीरां ते बाईनां झेर हळाहळ पीधां रे;

पंचाळीनां पूर्यां चीर, पांडव काम कीधां रे. ३

आवो हरि भजवानो ल्हावो, भजन कोई करशे रे,

कर जोडी कहे प्रेमळदास, भक्तोनां दुःख हरशे रे. ४

ग ग म प	ध ग ऽ म म ग सा ऽ रे ग म प	म ऽ रे ग ऽ ऽ सा
– – – –	– – – ~ ~ – – – – – – –	~ – ◡ ० ◡ – ~
ह रि ने –	भ ज – तां ह जी – – को अी नी –	ला – ज – – – ज
११	१ ४ ११	१ ४

सा ऽ ग प	म ऽ प सा रे सा सा ऽ सा सा सा रे	ग ग ऽ म म
~ – ~ ~	~ – – – – – ~ – – – – –	– – – ~ ~
तां – न थी	जा – णी – – – रे – ह रि ने –	भ ज – तां ह
+ ११	१ ४ + ११	१ ४

प ऽ म म ग ग ऽ म ग सा ऽ ग ऽ प	म ऽ ग रे ग सा सा ऽ
~ – – – – ~ – ~ ~ ~ ~ ~ – –	~ – – – – – ~ –
जी – को अी नी ला ज ज ज तां – न – थी	जा – णी – – – रे –
+ ११ १ ४ + ११	१ ४ +

रे ग् रे ग्	सा ग् रे सा नीं धं धं नीं सा रे ग्	रे ऽ ग् सा सा सा ऽ
– – – –	– ~ – – – – – ~ ~ – –	~ – ~ – – ~ –
जे – नी –	सु र ता – शा – म ळी या – –	सा – – थ व दे –
११	१ ४ + ११	१ ४ +

रे ग ऽ प	म ऽ ग रे ग् सा सा ऽ ग ग म प ‖
– – – –	~ – – – – – ~ – – – –
वे – – द	वा – णी – – – रे – ह रि ने –
११	१ १ + ११

प प	ग म ऽ प नी ध ऽ प म	ग ऽ म ग ग सा ऽ ग ऽ प
~ ~	– – – ~ ~ ~ – ~ ~	~ – ~ – – – – ~ – –
वा ले	उ – – गा – यो – प्र ह	ला द ह र णा – कं – स
११	१ ४ + ११	१ ४ + ११

म ऽ ग सा रे सा सा ऽ रे ग्	रे ग् रे सा नीं धं धं नीं सा रे ग्
~ – – – – – ~ – ~ ~	– ~ – – – – – ~ ~ – –
मा – यो – – – रे – वि भी	ष ण ने – – – आ – प्युं – –
१ ४ + ११	१ ४ + ११

रे ऽ ग् सा सा सा सा रे ग प	म ऽ ग सा सा ऽ सा सा सा रे ‖
~ – – – ~ – ~ ~ – –	~ – ~ ~ ~ – – – – –
रा – – ज रा व ण सं – –	हा – यों – रे – ह रि ने –
१ ४ + ११	१ ४ + ११

राग–बागेश्री–हींच

दिलमां दीवो करो, रे दिवो करो,
कूडा काम क्रोधने परहरो, रे दिलमां दीवो करो.

दया दिवेल प्रेमपरणायुं लावो, मांही सुरतानी दिवेट बनावो;
महीं ब्रह्म-अग्निने चेतावो रे. दिलमां०

साचा दिलनो दीवो ज्यारे थाशे, त्यारे अंधारुं मटी जाशे;
पछी ब्रह्मलोक तो ओळखाशे रे. दिलमां०

दीवो अणभे प्रगटे एवो, टाळे तिमिरना जेवो;
एने नेणे तो नीरखीने लेवो रे दिलमां०

दास रणछोड घर संभाळर्चु, जडी कूंची ने ऊघडचुं ताळुं;
थयुं भोमंळमां अजवाळुं. दिलमां०

ध ऽ नी प ऽ ध | सां सां नी ध म म प ध प | ग ग रे सा ऽ
दि – ल मा – – | दी वो क रो – रे – – – | दी वो क रो –
\+ | १ + | १ +

धं ऽ नीं सा सा ऽ , सा सा ऽ | सा ऽ ध ध ऽ नी ध ऽ प ध ऽ नी
हां – रे कु डा – – कु डा – | का – म क्रो – ध ने – – प – र
१ + | १ +

सां सां ऽ सां रें ध सां नी ध प ध
ह रो – रे – दि – ल माँ – –
१ +

धं नीं सा म म ऽ म ऽ म म ऽ म | म प ग रे ग म
द – या – दि – वे – ल प्रे – म | प र णा – युं –
१ + | १

म ऽ म नी ध नी | सां सां सां ऽ सां सां सां सां सां सां रें
ला – वो मां – हि | सु र ता – नी दी – वे ट ब –
\+ | १ +

ध ऽ सां नी ऽ ध प ऽ ध नी ध नी | सां ऽ सां मं मं ऽ
ना – – वो – – – – – – मँ हि – | ब्र – ह्म – अ –
१ + | १

ग ऽ रें सां सां रें | ध सां नी ध नी ध ऽ प ध ऽ नी
ग्नि – ने – चे – | ता – वो – रे दि – ल मा – –
\+ | १ +

राग मांड–ताल दादरा

प्रेमळ ज्योति तारो दाखवी
मुज जीवन-पन्थ उजाळ. ध्रु०

दूर पड्यो निज धामथी हुं ने घेरे घन अंधार,
मार्ग सूझे नव घोर रजनीमां, निज शिशुने संभाळ,
मारो जीवन-पन्थ ऊजाळ. १

डगमगतो पग राख तुं स्थिर मुज, दूर नजर छो न जाय,
दूर मार्ग जोवा लोभ लगीर न, एक डगलुं बस थाय,
मारे एक डलुं बस थाय. २

आज लगी रह्यो गर्वमां हुं ने मागी मदद न लगार,
आप-बळे मार्ग जोईने चालवा हाम धरी मुढ बाळ,
हवे मागुं तुज आधार. ३

भभकभर्या तेजथी हुं लोभायो, ने भय छतां धर्यो गर्व,
वीत्यां वर्षोने लोप स्मरणथी स्खलन थयां जे सर्व,
मारे आज थकी नवुं पर्व. ४

तारा प्रभावे निभाव्यो मने प्रभु आज लगी प्रेमभेर,
निश्चे मने ते स्थिर पगलेथी चलवी पहोंचाडशे घेर,
दाखवी प्रेमळ ज्योतिनी सेर. ५

सा ऽ सा सा | रे म ऽ प ध ऽ | प ध नी सां सां ध प म
– o o – | – – – – – – | o o o o – – – –
प्रे – म ळ | ज्यो ति – ता रो – | दा – – ख ख वी मु ज
\+ | १ + | १ +

ध प म ग सा ऽ रे ग | ग सा ऽ सा ||
– – – o o o o – | – ~ ~ – ||
जी व न पं – – थ उ | जा – – ळ ||
१ + | १ + ||

म म म म म म | प प प प म ध नी नी ऽ |
– – – – – – | – – – ‿ ‿ o o – |
दू र प ड्यो नि ज | धा म थी हूँ – – ने – |
१ + | १ + |

प प ऽ ध नी सां ऽ सां ध | सां ऽ ऽ सां | सां सां नी सां सां सां |
– – – ‿ ‿ o o o – | ~ – ~ – | – – – – – – |
घे रे – ध – न – अं – | धा – – र् | मा र्ग सु झे न व |
१ + | १ + | १ + |

नो नी सां ध ध प | ध रें ऽ सां नी नी ध ध प |
– – – – – – | o o o o o – – o o |
घो र र ज नी मां | नि ज शि शु ने – सं – |
१ + | १ + |

म म ग म प ध नी सां ऽ | ध प म ग सा रे ग |
~ – o o ‿ ‿ ‿ ‿ – | – – – o o – – |
भा ळ मा – रो – – – – | जी व न पं – थ उ |
१ + | १ + |

सा ऽ ऽ सा |||
~ – ~ – |||
जा – – ळ |||
१ + |||

राग – छाया ताल – केरवा-मध्यलय

निश्चे करो रामनु नाम, नथी जोगी थईने जावुं,
नथी करवां भगवां काय, नथी भेगुं करीने खावुं. टेक

गमे तो तमे भगवां करजो, गमे तो ऊजळां राखो;
नथी दूभवो सामा जीवने, सुख सामानुं ताको. १

एक त्राजवे सौ संसारी, बीजे जोगी लावो;
कया जोगीने राम मळ्या ? एवो तो एक बतावो २

महेतो, मीरां ने प्रहलाद, सेनो नापिक नाती,
धनो, पीपो, रोहिदास, कूबो, गोरो कुंभारनी जाती. ३

बोडाणो जाते रजपूत, गंगाबाई छे नारी,
दास थईने जो रह्यां तो घेर आव्या गिरिधारी. ४

रंका बंका सजन कसाई, भज्या रात ने दहाडो;
कया जोगीने राम मळ्या? एवो तो एक बतावो. ५

नथी राम विभूति चोळये, नथी उंधे शिर झोळये;
नथी नारी तजी वन जतां, ज्ञ्शां लगी आप न खोळे. ६

जंगलमां मंगल करी जाणे, मंगल जंगल जेने,
कडवुं मीठुं मीठुं कडवुं, रामजी वश छे तेने, ७

पय ओथे जेम घृत रह्यूं छे, तल ओथे जेम तेल,
कहे नरभो रघुवर छे सघळे, एवो एनो खेल. ८

प प म	प न्ी ऽ ध प म प	म प म प ग म रे ग ऽ ग म
- o o	o o o - o o o	- o o
नि श्चे -	क रो - रा म नुं -	ना - - - - - - म् - न थी
+ ४	१ २+ ४	१ २ +४

प म प ध म प ग् ग् रे ग्	रे सा ऽ प प
o o o o o o	- - - o o
जो - गी - - - थ अी ने -	जा वुं - न थी
१ २ + ४	१ २ + ४

प ध न्ी सां न्ी ध ध प म	म प ग म रे ग ऽ ऽ ग म
o o o o o o o	o - o o
क र वां - - भ ग वां -	का - - - - य - - न थी
१ २ + ४	१ २ + ४

प म ध् प ग् ग् रे ग्	रे सा ऽ
o o o o o o o o	- - ~
भे - गुं - क री ने -	खा वुं -
१ २ + ४	१ २ +

सा रे म म म म म ग	म प प प ध प ध नी सां
o o o o o o o o	o o - o o
ग मे - तो - त मे -	भ ग वां क र जो - - -
१ २ + ४	१ २+ ४

सां न्ी न्ी ध प ग म	प प ऽ	प ध सां सां रें सां रे ग्
o - o o o o o	- - ~	o o o - o o
ग मे तो अु ज ळां -	रा खो -	न थी - दू भ वो - -
१ २ + ४	१ २ +	१ २ + ४

रें सां नी सां सां	प सां सां न्ी न्ी ध ध न्ी	ध प प प म
- - o o -	o o o o o o o o	- - - o o
सा मा जी व ने	सु ख सा - मा - तुं -	ता को नि श्चे -
१ २ + ४	१ २ + ४	१ २ + ४

धून ताल—केरवा

सा सा सा सा सा रे सा न्ीं धं	धं न्ीं रे रे ग रे ग म
o o o o o ‿ ‿ o o	o o – o o ‿ ‿ o
र घु प ति रा – – घ व	रा – जा रा – – – म्
१ २ + ४	१ २ + ४

रे ग् रे सा न्ीं धं	धं न्ीं सा नीं सा
o – – o – – o o	o o o – o ~
प ति त पा व न	सी – ता – रा-म्
१ २ + ४	१ २ +

सा सा ग ग ग ग ग	ग रे ग प म ऽ ऽ
o o o o – o o	o o o o – o o
र घु प ति रा घ व	रा – जा – रा – म्
१ २ + ४	१ २ + ४

रे म म प ध् प	म प रे ग् रे ऽ ऽ
o – o – o o	o o o o – o o
प ति त पा व न	सी – ता – रा – म्
१ २ + ४	१ २ + ४

रे प प प प ध नी ध प	म प ग् रे रे ग् म प
o o o o ‿ ‿ o o o	o o o o o o o o
र घु प ति रा – – ध व	रा – जा – रा – – म्
१ २ + ४	१ २ + ४

रे ग् रे सा नीं सा न्ीं धं	धं न्ीं सा नीं सा ऽ
o – o ‿ ‿ o o –	o o o o – –
प ति त पा – – व न	सी – ता – रा म्
१ २ + ४	१ २ + ४

सा रे ग ग ग ऽ	रे ग म म ग म ऽ
‿ ‿ o – – –	‿ ‿ o o o – –
सी – – ता रा म्	सी – – ता – रा म्
१ २ + ४	१ २ + ४

रे रे म प ध् प	म ग म ग् रे ऽ ऽ
o o – ~ o o	‿ ‿ o – – o o
भ ज प्या रे तू –	सी – – ता रा – म्
१ २ + ४	१ २ + ४

प प प प ध नी ध प	म प ग् रे रे ग् म प
– o o ‿ ‿ o o o	o o o o o o o o
ई श्व र अ – – ल्ला –	ते – रे – ना – – म्
१ २ + ४	१ २ + ४

ग् रे ग् रे सा नीं सा न्ीं धं	धं न्ीं सा नीं सा ऽ सा
o o o o ‿ ‿ o o o	o o o o – o o
स ब को – स – – न्म ति	दे – भ ग वा – न्
१ २ + ४	१ २ + ४

ताल—दादरा अथवा केरवा

सा सा सा सा सा सा सा सा	नीं सा रे ग रे ग म म ग रे ऽ
– – o o – – o o	o o o o o o o o o – o
ना रा य ण ना रा य ण	ज य गो – विं – द ह रे – –
१ +	१ +

रे ग रे ग म प म ग रे सा	निं सा रे ग रे सा नीं सा ऽ
o o o o o o – – o o	o o – o o o o – –
ना – रा – य ण ना रा य ण	ज य गो पा – ल ह रे –
१ +	१ +

सा सा सा रे नीं् धं | धं नीं् रे सा रे ग म
o – – o o o | o o o o o o ~
रा धा कृ ष्ण ज य | कुं – ज बि हा – री
१ २ + ४ | १ २ + ४

ग् रे ग् रे सा सा नीं् धं | धं नीं् सा नीं सा सा ||
o o o o o o o o | o o o o – – ||
मु र ली – ध र गो – | व र ध न धा री ||
१ २ + ४ | १ २ + ४ ||

ग ग ग ग ग ग | ग रे ग प म ग म |
– o – o o o | o o o o o o – |
रा धा कृ ष्ण ज य | कुं – ज बि हा – री |
१ २ + ४ | १ २ + ४ |

रे रे म प प ध् प | म म ग् ग् रे सा |
o o – o o o o | o o o o – – |
मु – ली ध र गो – | व र ध न धा री |
१ २ + ४ | १ २ + ४ |

प प प नीं् ध प | म ग म .ग् रे रे ग् म प |
– o – o o o | ‿ ‿ o o o o o o o |
रा धा कृ ष्ण ज य | कुं – – ज बि हा – री – |
१ ७ + ४ | १ ३ + ४ |

ग् रे ग् रे सा नीं सा नीं धं | धं नीं् सा नीं सा सा ||
o o o o ‿ ‿ o o o | o o o o – – ||
मु र ली – ध – र गो – | व र ध न धा री ||
१ ३ + ४ | १ ३ + ४ ||

स्व० ना० मो० खरे

भारतीय संगीत विद्यालय ट्रस्ट

प्रकाशन